



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 398]

नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 14, 2018/अग्रहायण 23, 1940

No. 398]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 14, 2018/AGRAHAYANA 23, 1940

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर, 2018

(मामला सं. एसएसआर-4/2018)

विषय : चीन जनवादी गणराज्य और संयुक्त राज्य अमेरिका के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पेरॉक्सोसल्फेट (परसल्फेट) के आयातों पर अधिरोपित पाटन-रोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा।

फा. सं. 7/5/2018/डीजीएडी.—समय-समय पर यथा संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 (जिसे आगे अधिनियम भी कहा गया है) और समय-समय पर यथा संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं पर पाटन-रोधी शुल्क की पहचान, मूल्यांकन एवं संग्रहण तथा क्षति के निर्धारण हेतु) नियम 1995 जिसे एतदपश्चात् नियम भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने चीन जनवादी गणराज्य और जापान के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पेरॉक्सोसल्फेट जिसे परसल्फेट भी कहा जाता है (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) और जिस पर दिनांक 20.07.2007 की अधिसूचना सं. 14/1/2006-डीजीएडी के तहत पाटन-रोधी शुल्क की सिफारिश की गई थी, के आयात पर मूल पाटन-रोधी जांच की शुरुआत की थी। तदुपरांत, निर्णायक समीक्षा जांच में शुल्कों की समीक्षा की गई थी और दिनांक 12.3.2013 की अधिसूचना सं. 15/9/2011-डीजीएडी के तहत सिफारिशों को अधिसूचित किया गया था। तदनुसार, चीन जनवादी गणराज्य और जापान के लिए शुल्क अधिरोपण को जारी रखने हेतु दिनांक 16.05.2013 को सीमा शुल्क अधिसूचना सं. 11/2013 – सीमा शुल्क (एडीडी) जारी की गई थी।

- और जबकि, ताइवान, तुर्की और संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्राधिकारी द्वारा एक अन्य जांच संचालित की गई थी जिसमें दिनांक 4.3.2014 की अधिसूचना सं. 14/9/2012 –डीजीएडी के तहत केवल ताइवान और संयुक्त राज्य अमेरिका पर पाटन-रोधी शुल्कों की सिफारिश की गई थी। शुल्कों का अधिरोपण दिनांक 16.5.2014 की सीमा शुल्क अधिसूचना सं. 22/2014 –सीमा शुल्क (एडीडी) के तहत किया गया था और वही शुल्क संयुक्त राज्य अमेरिका और ताइवान के लिए दिनांक 15.5.2019 तक लागू हैं।
- और जबकि, मैसर्स केलिवर केमिकल्स प्रा. लि., मैसर्स वी आर परसल्फेट्स और मैसर्स योयो केमिकल्स (जिन्हें एतदपश्चात् “याचिकाकर्ता” अथवा “आवेदक” कहा गया है) ने चीन जनवादी गणराज्य और संयुक्त राज्य अमेरिका (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पेरॉक्सोसल्फेट (परसल्फेट) के आयातों

पर अधिरोपित पाटन-रोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा को आरंभ करने हेतु अधिनियम एवं नियमों के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष इस मामले में आवेदन दायर किया था और संबद्ध देशों के मूल के और वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटन-रोधी शुल्क को जारी रखने का अनुरोध किया था।

4. और जबकि, प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा जांच को आरंभ करने संबंधी स्पष्टीकरण देने हेतु आवेदकों द्वारा प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर दिनांक 20 मार्च, 2018 की अधिसूचना सं. 7/5/2018-डीजीएडी के तहत यह जांच करने हेतु एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया था कि क्या संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयात पर कथित शुल्कों की समाप्ति से पाटन के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति और उससे घरेलू उद्योग को हानि की संभावना है। चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की वैधता को केंद्र सरकार ने दिनांक 14 मई, 2018 की अधिसूचना सं. 26/2018 सीमाशुल्क (एडीडी) के तहत दिनांक 14 मई, 2019 तक बढ़ा दिया गया है।
5. वर्तमान समीक्षा के कार्यक्षेत्र में संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित, उपयुक्त वस्तुओं के आयातों से संबंधित मूल जांच के सभी घटक सम्मिलित होते हैं।

क. प्रक्रिया

6. प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त जांच की शुरुआत को अधिसूचित करते सार्वजनिक नोटिस को जारी करने के उपरान्त इस जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया को अपनाया गया है:

- i) प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों, संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, भारत में ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं, अन्य भारतीय उत्पादकों और घरेलू उद्योग को जांच की शुरुआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति भेजी और उनसे जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में उनके विचार व्यक्त करने का अनुरोध किया।
- ii) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमों के नियम 6(3) के अनुसार भारत में ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और संबद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय संस्करण की एक प्रति उपलब्ध कराई थी।
- iii) भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों को संबद्ध देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने का सुझाव देने का भी अनुरोध किया गया था। उत्पादकों/निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की एक प्रति भी संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों के नामों/पतों के साथ भेजी गई थी।
- iv) प्राधिकारी ने नियमों के नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना प्राप्त करने के लिए निर्यातकों संबंधी प्रश्नावली और अनुपूरक प्रश्नावली निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/ निर्यातकों को भेजी थी:

क. मैसर्स इन्डस्ट्रीयल केमिकल्स ग्रुप

ख. मैसर्स एफएमसी कारपोरेशन

ग. मैसर्स ई.आई. डुपॉन्ट नेमूर्स

घ. मैसर्स हेबेई जिहेंग ग्रुप कंपनी लिमिटेड

ड. मैसर्स फुलिडा इंडस्ट्रीज कंपनी लिमिटेड

च. मैसर्स ड्राई क्लोरीन कॉर्प (डीसीसी)

छ. मैसर्स शांक्सी बाओहुआ टेक्नोलॉजीस कंपनी लिमिटेड

ज. मैसर्स झांगजू पिंग योंगशेंग

झ. मैसर्स याताई इलेक्ट्रोकेमिकल कंपनी लि.

- v) उपर्युक्त अधिसूचना के प्रत्युत्तर में, किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने उत्तर नहीं दिया।

- vi) प्राधिकारी ने नियमों के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने हेतु भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातकों संबंधी प्रश्नावली भेजी थी:

क. मैसर्स निकोलस पिरामल इंडिया लिमिटेड

ख. मैसर्स गुजरात थीम्स बायोसिन लिमिटेड

ग. मैसर्स पद्म एजेंसीज

- घ. मैसर्स अरबिंदो फार्मा लि
 ङ. मैसर्स नोवार्टिस इंडिया लिमिटेड
 च. मैसर्स आर्टेक सर्फिन लिमिटेड
 छ. मैसर्स ज़ाईडेक्स इंडस्ट्रीज
 ज. मैसर्स वीनस इंसुलेटर प्रा. लिमिटेड
- vii) संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित आयातकों ने प्रश्नावली के उत्तर भरकर उत्तर दिया था।
 क. मैसर्स केमिकल कार्पोरेशन प्रा. लिमिटेड
 ख. मैसर्स जे केमिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड
 ग. मैसर्स श्री राज केमिकल्स
 घ. मैसर्स वाईसन इंडस्ट्रीज लिमिटेड
- viii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु एक सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय संस्करण उपलब्ध कराया था;
- ix) वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएण्डएस) को विगत तीन वर्षों और जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयातों का सौदा-वार विवरण प्रदान करने का अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी ने आयातों की मात्रा की गणना तथा सौदों की विधिवत जांच के उपरांत अपेक्षित विश्लेषण हेतु डीजीसीआईएण्डएस आंकड़ों पर विश्वास किया।
- x) सामान्य रूप से स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) और पाटन-रोधी नियमों के अनुबंध-III के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन लागत और उन्हें बनाने और क्रय करने की लागत के जरिए क्षति रहित कीमत (एनआईपी) का निर्धारण कर लिया गया है ताकि यह मूल्यांकन किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से निम्नतर पाटन-रोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति दूर करने हेतु पर्याप्त होगा। अतः पीओआई के लिए परिकल्पित एनआईपी पर तुलनात्मक प्रयोजन हेतु विचार किया गया है।
- xi) प्राधिकारी ने नियम 6(6) के अनुसार संबंधित सूचना के मौखिक प्रस्तुतीकरण हेतु हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 18 जून 2018 को मौखिक सुनवाई का अवसर प्रदान किया, जिसमें घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मौखिक सुनवाई में विचार प्रस्तुत करने वाले पक्षों को मौखिक रूप से व्यक्त किए विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। पक्षों को विरोधी पक्षों द्वारा प्रस्तुत लिखित प्रस्तुतीकरण एकत्र करने का भी सुझाव दिया गया था और इसके उपरांत अपने प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने का भी अनुरोध किया गया था।
- xii) घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना का यथावश्यक सीमा तक सत्यापन किया गया। केवल ऐसी सत्यापित सूचना पर आवश्यक संशोधन के साथ, जहां लागू हो, विश्वास किया गया।
- xiii) वर्तमान समीक्षा जांच के प्रयोजन हेतु जांच अवधि (पीओआई) 1 अक्टूबर, 2016 से 30 सितंबर, 2017 (12 माह) है। हानि विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल 2014-मार्च 2015, अप्रैल 2015-मार्च 2016, अप्रैल 2016-मार्च 2017 और पीओआई की अवधि को कवर किया गया था।
- xiv) इस जांच के दौरान इच्छुक पक्षों द्वारा किए गए प्रस्तुतीकरण को जहां संगत पाया गया, इस अंतिम जांच परिणाम में प्राधिकारी ने उस पर कार्यवाई की।
- xv) गोपनीय आधार पर इच्छुक पक्षों द्वारा प्रदत्त सूचना में गोपनीयता दावे की पर्याप्तता की जांच की गई थी। संतुष्टि होने पर, प्राधिकारी ने गोपनीयता दावों को, जहां पुख्ता दावा किया गया है, स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है और अन्य इच्छुक पक्षों को प्रकट नहीं किया गया है। जहां संभव था, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षों को गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय संस्करण प्रदान करने के निदेश दिए गए थे।
- xvi) जहाँ एक हितबद्ध पक्षकार ने सूचना प्रकट करना अस्वीकार किया है अथवा अन्यथा वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना प्रदान नहीं की है, अथवा जांच को काफी बाधित किया है, प्राधिकारी ने ऐसे पक्षों को असहयोगी माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर विचार/अभ्युक्तियों को रिकार्ड किया है।

- xvii) निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन अनिवार्य तथ्यों को शामिल करता एक प्रकटीकरण विवरण दिनांक 20.11.2018 को हितबद्ध पक्षकारों को जारी किया गया था जिसमें, प्रकटीकरण विवरण पर टिप्पणियां, यदि कोई हैं, दिनांक 01.12.2018 तक प्रस्तुत करने का समय दिया गया था। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों से प्रकटीकरण उपरांत प्राप्त टिप्पणियों पर उचित रूप से विचार किया है।
- xviii) “***” इस अंतिम जांच परिणाम में हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना और नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे गोपनीय माने जाने को दर्शाता है।
- xix) प्राधिकारी द्वारा पीओआई हेतु विनिमय दर को 66.70 रूपए -1 अम.डॉ. लिया गया है।

ख. विचाराधीन उत्पादन और समान वस्तुएं

घरेलू उद्योग का विचार

7. घरेलू उद्योग के विचार अधोलिखित हैं:

- i) इस समीक्षा जांच में विचाराधीन उत्पादन “पेरोक्सोसल्फेट्स” है जिसे आम तौर पर ‘परसल्फेट्स’ कहा जाता है। यह एक निकट रूप से संबंधित यौगिकों का समूह है। इन्हें क्षार धातु नमक (एल्कलाई मेटल साल्ट्स) के रूप में बनाया जाता है जिसमें अमोनियम परसल्फेट्स (एपीएस), पोटेशियम परसल्फेट्स (पीपीएस) और सोडियम परसल्फेट्स (एसपीएस) शामिल हैं। इनके रासायनिक सूत्र क्रमशः $(\text{NH}_4)_2\text{S}_2\text{O}_8$, $\text{K}_2\text{S}_2\text{O}_8$, $\text{Na}_2\text{S}_2\text{O}_8$ हैं। इन तीनों प्रकार के परसल्फेटों का प्रयोग समान है। इन्हें वस्त्र और रसायन उद्योग में इनीशिएटर और आक्सीडाइजिंग एजेंट के रूप में प्रयोग किया जाता है और एक को दूसरे के विकल्प के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। सभी तीनों साल्ट्स एक ही उत्पाद का विभिन्न रूप हैं।
- ii) संबद्ध वस्तुओं को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 में उपशीर्ष 2833 40 और भारतीय व्यापार वर्गीकरण (सामंजस्यपूर्ण वस्तु विवरण और कोडिंग प्रणाली पर आधारित) के अंतर्गत उपशीर्ष 283340 00 में वर्गीकृत किया जाता है।
- iii) यह एक निर्णायक समीक्षा जांच होने के नाते, विचाराधीन उत्पाद का कार्यक्षेत्र वही होगा जोकि संबंधित उत्पाद के लिए संचालित पूर्ववर्ती जांच में था। जापान और चीन जनवादी गणराज्य के मूल के और वहां से निर्यातित “पेरोक्सोसल्फेट्स” (जिसे परसल्फेट्स भी कहा जाता है) के आयातों से संबंधित निर्णायक समीक्षा पाटन-रोधी जांच में दिनांक 12.03.2013 के अंतिम जांच परिणाम सं. 15/9/2011-डीजीएडी और ताइवान, तुर्की और संयुक्त राज्य अमरीका से उद्भूत और निर्यातित “पेरोक्सोसल्फेट्स” (जिसे परसल्फेट्स भी कहा जाता है) के आयातों से संबंधित पाटन-रोधी जांच में दिनांक 04.03.2014 के अंतिम जांच परिणाम सं. 14.09.2012 में प्राधिकारी द्वारा की गई जांच पर अभी कार्रवाई की जानी है।
- iv) प्रयुक्त प्रौद्योगिकी और घरेलू और आयातित उत्पाद की गुणवत्ता में कोई अंतर नहीं है। वर्तमान जांच समीक्षा जांच है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के मामले की जांच की है, जिस पर कार्रवाई की गई है।
- v) तीन प्रकार की संबद्ध वस्तुएं तीन भिन्न किस्मों के पीयूसी को भिन्न नहीं बनाती। तीन भिन्न प्रकार के परसल्फेट्स नामतः पोटेशियम परसल्फेट्स, सोडियम परसल्फेट्स और अमोनियम परसल्फेट्स विचाराधीन एक ही उत्पाद हैं। विचाराधीन उत्पाद के लिए यह चौथी जांच है, अतः विचाराधीन उत्पाद का कार्यक्षेत्र पहले ही निर्धारित किया जा चुका है और पूर्ववर्ती जांचों में भी समान रहा है। यूरोपीय आयोग और यू.एस. आईटीसी ने निर्णित किया है कि परसल्फेट्स के तीनों प्रकार एक वस्तु हैं।
- vi) दो उत्पादों के मूल्यों और कीमतों में भिन्नता से वे उत्पाद भिन्न नहीं हो जाते। उत्पाद की किस्मों को उसी प्रकार विचाराधीन एक उत्पाद माना जाना चाहिए जैसा कि कास्टिक सोडा लाई और फ्लेक को एक उत्पाद माना जाता है। उपभोक्ताओं के उपलब्ध उत्पाद की किस्मों की सटीक परस्पर परिवर्तनशीलता के अभाव से वे भिन्न उत्पाद नहीं बन जाते। उत्पादक विभिन्न प्रकार के परसल्फेटों को परिवर्तित कर सकते हैं।
- vii) वी आर परसल्फेट्स एसपीएस की परख भी 99.0 प्रतिशत अधिकांशत 99.5 प्रतिशत से अधिक है जोकि पेरोक्सीकैम स्पैक (अमरीका से निर्यातक); पेरोक्सीकैम के एक्टिव ऑक्सीजन के समान है और याचिकाकर्ता भी समान हैं। उत्पाद की केकिंग के संबंध में निराधार दावे किए गए हैं। घरेलू उद्योग ऐरोसिल मिलाता है जोकि एक केकिंग विरोधी एजेंट है, जोकि एसपीएस को केक में परिवर्तित नहीं होने देता। निर्यातक उत्पादकों के उत्पादों में तथाकथित काले कण भी पाए जाते हैं।

- viii) प्राधिकारी ने बार बार यह निष्कर्ष निकाला है कि गुणवत्ता में भिन्नता से वस्तु भिन्न नहीं होती। आयातित वस्तुओं और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुओं का समान रूप से उपयोग होता है। घरेलू उद्योग का उत्पादन और बिक्री क्षति अवधि के दौरान बढ़ी जिससे यह प्रदर्शित होता है कि उपभोक्ताओं को घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं का उपयोग करने में कोई परेशानी नहीं है। उपभोक्ता केवल विभिन्न उत्पादों की आंतरिक अपेक्षाओं के कारण अपना नहीं चाहेंगे। यह तकनीकी विवशता का प्रश्न नहीं है परंतु केवल एक पक्ष की अनुकूलन क्षमता है कि कंपनी अन्य स्रोतों से सामग्री नहीं खरीदना चाहती।

विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

8. अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार इस प्रकार हैं:-

- चूंकि विचाराधीन उत्पाद (पीयूसी) के तीन ग्रेड हैं, एपीएस, एसपीएस और पीपीएस जिनका मूल्य और कीमत भिन्न होती है, अतः इन सबके लिए अलग जांच होनी चाहिए।
- घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुएं निम्नलिखित कारणों से भारतीय प्रयोक्ताओं द्वारा खरीद नहीं की गई। पेरॉक्सीकेम यूएसए परसल्फेट की परख के जांच परिणाम 99 प्रतिशत हैं और आम तौर पर 99.4 प्रतिशत से अधिक है जबकि इसकी तुलना में स्थानीय उत्पादक की परख 99 प्रतिशत से कम होती है। इस उत्पादन के अंतिम उपयोगों में से एक उपयोग उत्प्रेरक का है जहाँ उच्चतर परख की आवश्यकता है; संयुक्त राज्य अमेरिका में उत्पादित संबद्ध वस्तुओं में सक्रिय O_2 मात्रा घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुओं से अधिक उपयुक्त है; संयुक्त राज्य अमेरिका में उत्पादित संबद्ध वस्तुएं, घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुओं की तरह, कुछ समय में केकिंग आरंभ नहीं करतीं; घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तुओं में कुछ मामलों में काले कण पाए जाते हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

- इस समीक्षा जांच में विचाराधीन उत्पादन "पेरॉक्सोसल्फेट्स" है जिसे आम तौर पर 'परसल्फेट्स' कहा जाता है। यह एक निकट रूप से संबंधित यौगिकों का समूह है। इन्हें क्षार धातु नमक (एल्कलाई मेटल साल्ट्स) के रूप में बनाया जाता है जिसमें अमोनियम परसल्फेट्स (एपीएस), पोटेशियम परसल्फेट्स (पीपीएस) और सोडियम परसल्फेट्स (एसपीएस) शामिल हैं। इनके रासायनिक सूत्र क्रमशः $(NH_4)_2S_2O_8$, $K_2S_2O_8$, $Na_2S_2O_8$ हैं। इन तीनों प्रकार के परसल्फेटों का प्रयोग समान है। इन्हें वस्त्र और रसायन उद्योग में इनीशिएटर और आक्सीडाइजिंग एजेंट के रूप में प्रयोग किया जाता है और एक को दूसरे के विकल्प के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। सभी तीनों साल्ट्स एक ही उत्पाद का विभिन्न रूप हैं।
- उन्हें सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के एचएस कोड 28334000 के तहत अध्याय 28 में वर्गीकृत किया गया है। यह स्पष्ट किया जाता है कि एचएस कोड केवल संकेतात्मक हैं और सभी परिस्थितियों में उत्पाद विवरण प्रबल होगा।
- हितबद्ध पक्षकार के इस तर्क के संबंध में कि तीन प्रकार के परसल्फेटों को एक उत्पाद नहीं माना जाना चाहिए, प्राधिकारी ने नोट किया कि पोटेशियम परसल्फेट, सोडियम परसल्फेट और अमोनियम परसल्फेट केवल विभिन्न प्रकार के परसल्फेट हैं। विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न प्रकारों को निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विगत में एक उत्पाद के रूप में माना गया है। याचिकाकर्ता ने इस संबंध में प्रस्तुत किया कि संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ ने संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी जांच भी संचालित की है, जिसमें सभी प्रकार के परसल्फेटों को उनके भौतिक और रासायनिक गुणों, परस्पर परिवर्तन की क्षमता आदि की जांच के बाद एक उत्पाद माना गया था। प्राधिकारी ने सभी प्रकार के परसल्फेटों को सभी पूर्ववर्ती जांचों में एक उत्पाद माना है। जहाँ तक विभिन्न उत्पाद किस्मों के विभिन्न कीमत स्तरों का प्रश्न है, यह नोट किया जाता है कि उत्पाद किस्मों के बीच कीमत का अंतर वस्तुतः इस निष्कर्ष को उचित नहीं ठहराता कि एक विशिष्ट उत्पाद प्रकार को एक भिन्न उत्पाद माना जाए।
- रिकार्ड पर प्रस्तुत सूचना पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला कि संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पादों और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। भौतिक और रासायनिक लक्षणों, वस्तुओं के कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विशिष्टताओं, वितरण और विपणन और टैरिफ वर्गीकरण जैसे लक्षणों के लिए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं की संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के साथ तुलना की जा सकती है। दोनों उत्पाद तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से एक दूसरे का विकल्प हैं। उपभोक्ता दोनों को एक दूसरे से परस्पर बदलकर प्रयोग कर रहे हैं।

13. प्राधिकारी का मानना है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं पाटन-रोधी नियमों के अनुसार संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तुएं हैं।

ग. घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र और उसका स्थान

घरेलू उद्योग के विचार

14. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- मैसर्स कैलीबर केमिकल प्रा. लि., मैसर्स वी.आर. परसल्फेट्स और मैसर्स योयो केमिकल्स (याचिकाकर्ता के रूप में संदर्भित) द्वारा आवेदन किया गया था। देश में संबद्ध वस्तुओं का एक अन्य उत्पादक नामतः मैसर्स गुजरात परसल्फेट्स प्रा. लि. है।
 - याचिकाकर्ताओं ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का आयात नहीं किया है। याचिकाकर्ता न तो भारत में किसी आयातक से संबद्ध है न ही संबद्ध देशों में किसी निर्यातक के साथ। याचिकाकर्ताओं का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन का 'एक प्रमुख अंश' है। याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमों की परिभाषा के अंतर्गत अपेक्षाओं को संतोषजनक रूप से पूरा करते हैं।
 - मैसर्स केमिकल कार्प संबद्ध वस्तुओं का एक आयातक है जिसने घरेलू खपत हेतु वस्तुओं की निकासी की। मैसर्स वी. आर. परसल्फेट्स ने केमिकल कार्प. के लिए सामग्री की खरीद की। घरेलू उद्योग के कार्यक्षेत्र से घरेलू उत्पादकों को अलग करने का प्रश्न तब तक नहीं उठता जब तक कि घरेलू उत्पादक ने स्वयं वस्तुओं का आयात किया है अथवा वह उसके आयातक और निर्यातक से संबद्ध है। मैसर्स वी. आर. परसल्फेट्स ने केवल उपभोक्ता के कहने पर सोडियम परसल्फेट्स का क्रय किया, जोकि कंपनी से नियमित रूप से पीयूसी की एक किस्म की खरीद कर रहा है परंतु वह संयुक्त राज्य अमेरिका से पीयूसी की अन्य किस्म चाहता है और वह उसी समय कंपनी से संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्पादक द्वारा सप्लाई किए गए उत्पाद में संशोधन कराना चाहता है।
 - उत्पादक का प्रमुख व्यवसाय संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन और क्रय है। इसके अतिरिक्त आयात प्रत्युत्तर कारवाई की तरह नहीं किए गए थे। किसी भी तरह से यदि मैसर्स वी. आर. परसल्फेट्स को घरेलू उद्योग से बाहर किया जाता है, तो घरेलू उद्योग द्वारा प्रदर्शित किए गए सुधार की सीमा में कमी आएगी।

विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

15. इस संबंध में निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किए गए थे-
- मैसर्स वी. आर. परसल्फेट्स, मैसर्स केमिकल कार्प प्रा. लि. से संबद्ध वस्तुओं का आयात करता रहा है और प्रायः उसने यूएसए से भी संबद्ध वस्तुओं का आयात किया होगा और इस प्रकार वह अन्यथा बयान देकर प्राधिकारी को गुमराह कर रहा है।
 - याचिकाकर्ता को यह दावा नहीं करना चाहिए कि संयुक्त राज्य अमेरिका से हो रहे आयात पाटन और क्षति की संभावना का कारण हैं क्योंकि वे स्वयं इन वस्तुओं का आयात कर रहे हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

16. मैसर्स कैलीबर केमिकल प्रा. लि., मैसर्स वी. आर. परसल्फेट्स, मैसर्स योयो केमिकल्स (याचिकाकर्ता के रूप में संदर्भित) द्वारा आवेदन किया गया था। देश में संबद्ध वस्तुओं का एक अन्य उत्पादक नामतः मैसर्स गुजरात परसल्फेट्स प्रा. लि. है। भागीदार उत्पादकों द्वारा किया गया उत्पादन एक बड़ा हिस्सा है।
17. मैसर्स वी. आर. परसल्फेट्स द्वारा संबद्ध वस्तुओं का आयात किए जाने से संबंधित दावों की जांच की गई। यह नोट किया जाता है कि मैसर्स वी. आर. परसल्फेट्स की स्वयं की स्वीकृति के अनुसार, मैसर्स वी. आर. परसल्फेट्स ने एक आयातक अर्थात् केमिकल कार्प प्रा. लि. से संबद्ध वस्तुओं की खरीद की थी, याचिकाकर्ता ने स्पष्ट किया कि (क) मैसर्स केमिकल कार्प, जोकि एक व्यापारी आयातक है, अंतिम प्रयोक्ता उपभोक्ता की अपेक्षाओं के अनुसार वस्तुओं का निर्माण/प्रसंस्करण करता है। क्रय की गई मात्रा उसके स्वयं के उत्पादन, भारतीय उत्पादन तथा कुल आयातों की तुलना में नगण्य है। इसे देखते हुए, प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकालना उचित समझा कि आवेदक उत्पादक नियमों के नियम 2 (ख) और नियम 5 के अनुसार घरेलू उद्योग के मापदंड को पूरा करते हैं।

घ. बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी), सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य और पाटन मार्जिन का निर्धारण

घरेलू उद्योग के विचार

18. घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ साथ निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किए:

- i. परिग्रहण प्रोटोकाल के उपबंधों में से एक 11 दिसम्बर, 2016 को समाप्त हो गया था। निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात पर विचार करते हुए जांच आगे बढ़ानी चाहिए कि चीन के उत्पादक उत्पादकों के रूप में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था परिस्थितियों में कार्य प्रचालन नहीं कर रहे हैं क्योंकि चीन में मूल्य और कीमतें बाजार ताकतों का यथोचित रूप से प्रतिबिंबित नहीं करती हैं। अनुबंध-1 का पैरा 8 उन मापदंडों को स्पष्ट करता है जिन पर बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने के लिए विचार किया जाएगा। चूंकि चीन की कंपनियों को दिसम्बर 2016 तक अनुबंध-1 के पैरा 8 में उल्लिखित कारणों से बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया गया था और वर्तमान पीओआई में परिग्रहण से पूर्व की अवधि का भाग शामिल है, अतः याचिकाकर्ता का कहना है कि चीन के उत्पादकों को उस समय तक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में मानना आवश्यक है जब तक कि जांच अवधि में परिग्रहण प्रोटोकाल में निर्धारित अवधि शामिल है।
- ii. चीन के उत्पादकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वातावरण में प्रचालन कर रही कंपनियाँ माना जाना चाहिए और प्राधिकारी को अनुबंध-1 के पैरा-7 के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की कार्यवाही करनी चाहिए।
- iii. सामान्य मूल्य तृतीय देश उचित बाजार अर्थव्यवस्था में समान वस्तु की कीमत के आधार पर इस कारण निर्धारित नहीं किया जा सका कि संगत सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। याचिकाकर्ता ने भारत में विधिवत रूप से समायोजित उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य पर विचार करने का दावा किया है।
- iv. चीन से पाटन मार्जिन न केवल महत्वपूर्ण है परंतु पर्याप्त भी है, अतः यह भारत में विचाराधीन उत्पाद के बड़ी मात्रा में पाटन की मौजूदगी को उचित ठहराता है। लागू पाटन-रोधी शुल्क के बावजूद वर्तमान क्षति अवधि में, चीन की आयात मात्रा काफी अधिक बनी रही है।
- v. चीन के उत्पादकों के पास उपलब्ध उत्पादन क्षमताओं पर विचार करते हुए और उनके उच्च निर्यात उन्मुखीकरण को देखते हुए पाटन जारी रहेगा और पाटन-रोधी शुल्क समाप्त करने पर यह इससे भी अधिक बढ़ेगा।
- vi. संयुक्त राज्य अमरीका के लिए भी, याचिकाकर्ता ने भारत में उत्पादन की लागत के आधार पर विधिवत रूप से समायोजित सामान्य मूल्य का दावा किया है क्योंकि सार्वजनिक रूप से कोई अन्य विश्वसनीय सूचना उपलब्ध नहीं है।

विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

19. इस संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई विचार सामने नहीं रखा गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

20. जांच शुरुआत के समय, याचिकाकर्ता ने चीन जनवादी गणराज्य को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मानते हुए अनुमान के साथ कार्यवाही की। शुरुआत पर, प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य में उत्पादकों/निर्यातकों को शुरुआत नोटिस का प्रत्युत्तर देने और इस बात का निर्धारण करने, कि उनका आंकड़ा/सूचना सामान्य मूल्य निर्धारण के लिए अपनाया जा सकता है, से संबंधित सूचना प्रदान करने का सुझाव दिया। प्राधिकारी ने इस संबंध में संगत सूचना प्रदान करते हुए सभी ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को प्रश्नावली की प्रतियाँ भेजीं। तथापि, चीन के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने किसी प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया।
21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में संयुक्त राज्य अमरीका से संबद्ध वस्तुओं के किसी आयातक और निर्यातक ने निर्यातकों की प्रश्नावली प्रस्तुत नहीं की। इस असहयोग को देखते हुए, प्राधिकारी चीन जनवादी गणराज्य और संयुक्त राज्य अमरीका के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण करने में असमर्थ है।
22. संबद्ध देशों से किसी उत्पादक निर्यातक के असहयोग को देखते हुए, प्राधिकारी व्यक्तिगत पाटन मार्जिन का निर्धारण करने में असमर्थ है और सबसे बेहतर उपलब्ध सूचना के सिद्धांतों के साथ आगे कार्यवाही करने के लिए बाधित है। प्राधिकारी ने नियमों के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्य के हिसाब से सामान्य मूल्य का निर्धारण किया। भारत में चीन जनवादी गणराज्य और संयुक्त राज्य अमरीका से आयातित संबद्ध वस्तुओं का सामान्य मूल्य घरेलू उद्योग के लिए अनुमत स्तरों पर घरेलू उद्योग द्वारा कच्चे माल और सुविधाओं की इष्टतम खपत, कन्वर्जन लागत, ब्याज, एसजीए, आदि पर विचार करते हुए तय किया गया जिसमें उत्पादन लागत पर उचित लाभ शामिल है। परसल्फेट की प्रत्येक किस्म, के लिए अलग सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है। तदनुसार, तय निर्धारित सामान्य मूल्य नीचे दिए गए पाटन मार्जिन के अनुरूप है।
23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी को निर्दिष्ट फार्म और तरीके से सूचना उपलब्ध नहीं कराई है जिसे निर्यात मूल्य और व्यक्तिगत पाटन-मार्जिन के निर्धारण के लिए उपयोग किया जा सकता था। अतः प्राधिकारी ने डीजीसीआईएण्डएस के सौदे-वार आंकड़ों के आधार पर संबद्ध देशों में उत्पादकों/निर्यातकों के लिए

निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। निर्यात मूल्य को समुद्री मालभाड़ा, समुद्री बीमा कमीशन, बैंक प्रभार, पतन व्यय और अंतर्देशीय माला भाड़ा प्रभारों को समायोजित करते हुए कारखानागत निवल निर्यात कीमत पर पहुंचाने हेतु समायोजित किया गया है। भारत में परसल्फेटों की प्रत्येक किस्म के लिए एक अलग भारित औसत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है जिसे नीचे दिए गए पाटन मार्जिन में दिया गया है। तदनुसार, संबद्ध देशों से निर्यातों के लिए कारखानागत निवल निर्यात कीमत नीचे दी गई पाटन मार्जिन तालिका में दिखाया गया है।

संबद्ध देशों का पाटन मार्जिन

24. संबद्ध देशों का पाटन मार्जिन संबद्ध वस्तुओं के किस्म-वार सामान्य मूल्य और कारखानागत निवल निर्यात कीमत की तुलना करते हुए निर्धारित किया गया है। नीचे दी गई तालिका प्रत्येक संबद्ध देश से भारित औसत पाटन मार्जिन को प्रदर्शित करती है।

क्रम सं.	उत्पाद किस्म	आयात	सीएनवी	एनईपी	डीएम		
		एमटी	अम.डॉ./ कि.ग्रा.	अम.डॉ./ कि.ग्रा.	अम.डॉ./ कि.ग्रा.	%	रेंज
	चीन						
1	अमोनियम परसल्फेट	498	***	***	***	***	
2	पोटेशियम परसल्फेट	104	***	***	(***)	(***)	
3	सोडियम परसल्फेट	25	***	***	***	***	
4	कुल आयात मात्रा	627	***	***	***	***	0-5
	संयुक्त राज्य अमरीका						
6	अमोनियम परसल्फेट	303	***	***	***	***	
7	पोटेशियम परसल्फेट	-	-	-	-	-	
8	सोडियम परसल्फेट	772	***	***	***	***	
9	कुल आयात मात्रा	1,074	***	***	***	***	10-20

25. यह देखा गया है कि चीन जनवादी गणराज्य के मामले में पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से कम है, जबकि संयुक्त राज्य अमरीका के मामले में पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है।

ड. क्षति का निर्धारण और कारणात्मक संबंध

घरेलू उद्योग के विचार

26. जहाँ तक क्षति और कारणात्मक संपर्क का संबंध है, घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:-

- विचाराधीन उत्पाद की मांग क्षति अवधि के दौरान बढ़ी।
- संबद्ध देशों से आयात मात्रा क्षति अवधि के दौरान बढ़ी है और इसकी भारतीय बाजार में अच्छी हिस्सेदारी है। संबद्ध आयात की मात्रा में वृद्धि मौजूदा लागू शुल्कों के बावजूद है। यदि ये लागू नहीं होते, तो पूरा भारतीय बाजार संबद्ध आयातों की सुविधा लेता।
- संबद्ध वस्तुओं का खदान मूल्य घरेलू उद्योग के क्रय मूल्य से कम रहा है और अतः इससे सकारात्मक रूप से कीमतों में गिरावट आई है। यहां तक कि ग्रेड-वार, दोनों संबद्ध देशों द्वारा निर्यातित किए जा रहे सभी ग्रेडों की कीमतों में काफी गिरावट हुई है।
- लागू शुल्कों के कारण आयातों की कम कीमत से अभी कोई ह्रास/न्यूनीकरण प्रभाव नहीं पड़ा है परंतु ये आयातों के कीमत उतार-चढ़ाव के साथ साथ वर्तमान शुल्कों की समाप्ति की अनुमति के मामले में घरेलू उद्योग की कीमतों के स्पष्ट संकेतक हैं।
- संबद्ध वस्तुओं के आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। आयात से घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हुई है।
- घरेलू उद्योग की क्षमता वही रही जबकि घरेलू उद्योग के उत्पादन त्रिकी और क्षमता उपभोग में वृद्धि हुई है।

- vii. समग्र रूप से घरेलू उद्योग का बाजार हिस्से में गिरावट आई है जबकि संबद्ध आयातों में वृद्धि हुई है।
- viii. व्याज और कर से पूर्व लाभ, आरओसीई और नकद लाभ सभी क्षति अवधि के दौरान बढ़ रहे हैं परंतु घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की संभावित स्थिति के निर्धारण के लिए, याचिकाकर्ता ने आयातों के लदान-मूल्य पर विचार किया और इन कीमतों पर घरेलू उद्योग द्वारा उत्पाद की बिक्री करने पर घरेलू उद्योग की लाभप्रदता का निर्धारण किया। घरेलू उद्योग द्वारा आयातों के लदान मूल्य के बराबर मूल्यों पर उत्पाद सप्लाई करने से घरेलू उद्योग को काफी वित्तीय घाटे का सामना करना पड़ता। पाटन-रोधी शुल्क को समाप्त करने पर घरेलू उद्योग के सभी कीमत मापदंडों में तेजी से गिरावट आएगी। अतः लाभ, नकदी-प्रवाह और आरओआई के रूप में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में सुधार मौजूदा पाटन-रोधी शुल्क का उपचारात्मक प्रभाव है।
- ix. घरेलू उद्योग के वस्तुसूची स्तरों में आधार वर्ष के स्तरों की तुलना में वृद्धि हुई है।
- x. घरेलू उद्योग के रोजगार स्तरों और भुगतान किए गए वेतन में भी क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- xi. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटन का घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव रहा है। यह सकारात्मक और महत्वपूर्ण रहा है।

विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

27. इस संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई विचार प्रस्तुत नहीं किए गए हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

28. प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमों के अनुसार क्षति के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विचारों की जांच की है।
29. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच के लिए, प्राधिकारी उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले संगत आर्थिक घटकों और सूचकांकों जैसे कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री-प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि पर नियमों के अनुबंध-॥ (iv) के अनुसार विचार किया है।

I. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर उसका असर

क. कुल मांग और बाजार हिस्सा

30. भारत में उत्पाद की मांग अथवा खपत सभी भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्री और सभी स्रोतों से आयातों का योग होती है। इस प्रकार आकलित मांग नीचे तालिका में दी गई है।

क्रम सं.	विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
1	संबद्ध देशों के आयात	एमटी	1068	1221	1424	1701
2	अन्य देशों के आयात	एमटी	25	115	225	258
3	घरेलू उद्योग	एमटी	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचिपत्रित	100	104	109	121
4	अन्य भारतीय उत्पादक	एमटी	***	***	***	***
4क	प्रवृत्ति	सूचिपत्रित	100	90	76	98
5	मांग/खपत	एमटी	6,157	6,451	6,826	7850

31. यह देखा गया है कि विचारधीन उत्पाद की मांग पूरी क्षति अवधि और पीओआई के दौरान बढ़ी है।

ख. आयात मात्रा और संबद्ध देशों की हिस्सेदारी

32. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में, प्राधिकारी को यह विचार करने की आवश्यकता है कि पाटित आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि वास्तव में हुई है अथवा यह भारत में उत्पादन अथवा खपत से संबद्ध है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा का नीचे विश्लेषण किया गया है:-

क्रम सं.	विवरण	यूओएम	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
	आयात मात्रा					
1	संबद्ध देश	एमटी	1,068	1,221	1,424	1,701

1क	चीन	एमटी	731	645	477	627
1ख	संयुक्त राज्य अमरीका	एमटी	337	576	947	1,074
2	अन्य देश	एमटी	25	115	225	258
3	कुल	एमटी	1,093	1,336	1,649	1,959
आयातों में हिस्सेदारी						
1	संबद्ध देश	%	98	91	86	87
1क	चीन	%	67	48	29	32
1ख	संयुक्त राज्य अमरीका	%	31	43	57	55
2	अन्य देश	%	2	9	14	13
3	कुल	%	100	100	100	100
निम्नलिखित के संबंध में संबद्ध देशों के आयात						
4क	भारतीय उत्पादन	%	***	***	***	***
4क(1)	प्रवृत्ति	सूचिपत्रित	100	119	131	138
4ख	खपत	%	17	19	21	22

33. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयात मात्रा पूरी क्षति अवधि और पीओआई के दौरान बढ़ी है। अन्य देशों से आयातों में भी आधार वर्ष की तुलना में क्षति अवधि और पीओआई के दौरान काफी वृद्धि हुई है। तथापि, यह हिस्सेदारी उतनी बड़ी नहीं है जितनी कि संबद्ध देशों की हिस्सेदारी है। संबद्ध देशों में किए जाने वाले आयातों में क्षति अवधि और पीओआई के दौरान किए गए अधिकांश आयात शामिल हैं। उत्पादन और खपत के संबंध में आयात काफी बड़े नहीं हैं और समग्र क्षति अवधि के दौरान बहुत कम वृद्धि के साथ ये स्थिर बने रहे हैं।

II. कीमत प्रभाव

34. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में, यह विश्लेषित करने की आवश्यकता है कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में तथाकथित पाटित आयातों से कीमतों में भारी गिरावट आई है, अथवा ऐसे आयात अन्यथा कीमतों को कम करने अथवा कीमत वृद्धि से बचने के लिए किए गए हैं, जोकि अन्यथा सामान्य रूप से भी घटित होता। संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत गिरावट कीमत से कम पर बिक्री, कीमत में कटौती और कीमत अवरोध, यदि कोई है, के संदर्भ में जांच की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजन हेतु, घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) और क्षतिरहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों के खदान मूल्यों के साथ की गई है।

क. कीमत कटौती

घरेलू उद्योग ने उत्पाद के खदान मूल्य के साथ, व्यापार के समान स्तर पर घरेलू उद्योग के औसत बिक्री मूल्य की तुलना करते हुए तथाकथित पाटित आयातों के प्रभाव संबंधी जानकारी प्रदान की है। विचाराधीन उत्पाद की प्रत्येक किस्म के लिए अलग कीमत कटौती और उसके बाद विचाराधीन उत्पाद के लिए भारित औसत निकाली गई है। अतः यह देखा गया है कि कीमत कटौती सकारात्मक है।

क्रम सं.	उत्पाद किस्म	आयात	एनएस आर	खदान मूल्य	कीमत में गिरावट		
		एमटी	रु/कि.ग्रा	रु/कि.ग्रा	रु/कि.ग्रा	%	रेंज
	चीन						
1	अमोनियम परसल्फेट	498	***	55.24	***	***	
2	पोटेशियम परसल्फेट	104	***	110.83	***	***	
3	सोडियम परसल्फेट	25	***	90.69	***	***	

4	कुल आयात मात्रा	627	***	65.87	***	***	15-25
	संयुक्त राज्य अमरीका						
5	अमोनियम परसल्फेट	303	***	63.65	***	***	
6	पोटेशियम परसल्फेट	-	***	-	-	-	
7	सोडियम परसल्फेट	772	***	95.98	***	***	
8	कुल आयात मात्रा	1,074	***	86.86	***	***	10-20

ख. कीमत से कम पर बिक्री

36. घरेलू उद्योग ने डीआई के एनआईपी के साथ आयातों के लदान मूल्य की तुलना संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा कीमत से कम पर बिक्री के संबंध में जानकारी प्रदान की है। यह तुलना उत्पाद किस्म-वार की गई है और इसके बाद पीयूसी के लिए भारत औसत अभिकलित की गई है।

क्रम सं.	उत्पाद किस्म	आयात	एन आईपी	खदान मूल्य	कीमत में गिरावट		
		एमटी	रू/कि.ग्रा	रू/कि.ग्रा	रू/कि.ग्रा	%	रेंज
	चीन						
1	अमोनियम परसल्फेट	498	***	55.24	***	***	-
2	पोटेशियम परसल्फेट	104	***	110.83	(***)	(***)	-
3	सोडियम परसल्फेट	25	***	90.69	***	***	-
4	कुल आयात मात्रा	627	***	65.87	(***)	(***)	नकारात्मक
	संयुक्त राज्य अमरीका						
5	अमोनियम परसल्फेट	303	***	63.65	(***)	(***)	-
6	पोटेशियम परसल्फेट	-	-	-	-	-	-
7	सोडियम परसल्फेट	772	***	95.98	***	***	-
8	कुल आयात मात्रा	1,074	***	86.86	***	***	0-10

पीओआई-पश्चात

क्रम सं.	उत्पाद किस्म	आयात	एन आईपी	खदान मूल्य	कीमत से कम पर बिक्री		
		एमटी	रू/कि.ग्रा	रू/कि.ग्रा	रू/कि.ग्रा		
	चीन						
1	अमोनियम परसल्फेट	118	***	59.30	(***)	(***)	-
2	पोटेशियम परसल्फेट	-	-	-	-	-	-
3	सोडियम परसल्फेट	-	-	-	-	-	-
4	कुल आयात मात्रा	118	***	59.30	(***)	(***)	नकारात्मक
	संयुक्त राज्य अमरीका						
5	अमोनियम परसल्फेट	18	***	78.93	(***)	(***)	-

6	पोटेशियम परसल्फेट	19	***	101.04	(***)	(***)	-
7	सोडियम परसल्फेट	133	***	96.68	***	***	-
8	कुल आयात मात्रा	170	***	95.29	***	(***)	नकारात्मक

37. यह देखा गया है कि चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर कीमत से कम पर बिक्री जांच अवधि के साथ जांच अवधि पश्चात के लिए नकारात्मक है जबकि यूएसए से यह जांच अवधि के लिए नाममात्र और जांच अवधि के पश्चात के लिए नकारात्मक है।

ग. पाटित आयातों का कीमत ह्रास और न्यूनीकरण प्रभाव

38. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयात घरेलू कीमतों का ह्रास अथवा न्यूनीकरण कर रहे हैं और क्या ऐसे आयातों का प्रयोजन काफी हद तक कीमतों का दबाना अथवा कीमत में वृद्धि को रोकना है, जोकि अन्यथा काफी हद तक बढ़ जाती, डीआई ने क्षति अवधि के दौरान लागत और कीमतों में परिवर्तन के संबंध में जानकारी प्रदान की है। यह स्थिति नीचे तालिका में प्रदर्शित की गई है।

क्रम सं.	विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
1	बिक्री की लागत	रु/कि.ग्रा	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	100	89
2	बिक्री मूल्य	रु/कि.ग्रा	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	108	108
3	खदान मूल्य	रु/कि.ग्रा	75	78	80	79
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	107	106

39. यह देखा गया है कि 2015-16 के दौरान मामूली वृद्धि के साथ क्षति अवधि के दौरान बिक्री की लागत लगभग एक ही स्तर पर बनी हुई है, तथापि, पिछले वर्षों और आधार वर्ष की तुलना में पीओआई के दौरान इसमें गिरावट आई है। घरेलू उद्योग का बिक्री मूल्य पिछले वर्ष की तुलना में क्षति अवधि और पीओआई में बढ़ा है। आधार वर्ष की तुलना में क्षति अवधि और पीओआई में आयात का खदान मूल्य लगभग एक ही रेंज में बना रहा है और डीआई के बिक्री मूल्य से कम है। यह नोट किया गया कि हालांकि पीओआई के दौरान बिक्री की लागत में कमी आई, लेकिन डीआई अपने बिक्री मूल्य में वृद्धि करने में सक्षम रहा। इस प्रकार आयात घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत ह्रास और न्यूनीकरण के माध्यम से कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाल कर रहे हैं।

घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मापदंडों की जांच

40. एडी नियमों के लिए अनुबंध II के अनुसार क्षति के निर्धारण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की एक वस्तुनिष्ठ जांच शामिल होगी। ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में, एडी नियमों में उपबंधित है कि घरेलू उद्योग पर पाटित किए गए आयातों के प्रभाव की जांच में उद्योग की स्थिति पर असर डालने वाले सभी प्रासंगिक आर्थिक कारकों और सूचकांकों जिसमें बिक्री में वास्तविक और संभावित गिरावट, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सेदारी, उत्पादकता, निवेश पर अर्जन या क्षमता उपभोग; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा; नकदी प्रवाह, वस्तुसूची, रोजगार, वेतन, विकास, पूंजीगत निवेश बढ़ाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं, का एक वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होना चाहिए।

41. तदनुसार, घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मापदंडों का विश्लेषण नीचे दिया गया है:

क. उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्री

42. क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग का प्रदर्शन निम्नानुसार है:

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
1	क्षमता	एमटी	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	100

2	उत्पादन	एमटी	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	110	125
3	क्षमता उपभोग	%	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	इंडेक्स	100	103	110	126
4	घरेलू बिक्री	एमटी	***	***	***	***
4क	प्रवृत्ति	इंडेक्स	100	104	109	121

43. यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की क्षमता क्षति अवधि में समान रही। क्षति अवधि और पीओआई के दौरान घरेलू उद्योग के क्षमता उपभोग, उत्पादन और बिक्री में वृद्धि हुई।

ख. मांग में बाजार हिस्सेदारी

44. घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी पर पाटित आयात के प्रभाव की जांच की गई।

क्र. सं.	विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
1	संबद्ध देश	%	17	19	21	22
2	अन्य देश	%	1	2	3	3
3	घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	95
4	अन्य भारतीय उत्पादक	%	***	***	***	***
4क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	83	67	78

45. यह देखा गया कि घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी क्षति अवधि के दौरान समान रही, हालांकि, पीओआई के दौरान थोड़ी गिरावट आई जबकि क्षति अवधि और पीओआई के दौरान संबद्ध देशों की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई। अन्य देशों की हिस्सेदारी नगण्य है। पिछले साल की तुलना में पीओआई के दौरान मामूली वृद्धि के साथ अन्य भारतीय उत्पादकों की हिस्सेदारी में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है।

ग. वस्तु सूची

विवरण	यूओएम	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
औसत स्टॉक	एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88	75	133

46. ऐसा देखा गया कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के औसत वस्तुसूची स्तर में गिरावट आई है जबकि पीओआई के दौरान इसमें वृद्धि हुई है, हालांकि औसत अनुमत वस्तुसूची स्तर के बारे में डेटा की अनुपस्थिति को देखते हुए, बड़ी हुई वस्तुसूची के प्रभाव का जायजा नहीं लगाया जा सकता है।

घ. लाभ, निवेश पर आय और नकदी प्रवाह

47. लाभ, निवेश पर आय और नकदी प्रवाह के संबंध में घरेलू उद्योग का कार्यनिष्पादन निम्नानुसार है :

क्र. सं.	विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
1	लाभ/ हानि	लाख रु	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115	157	228
2	नकद लाभ	लाख रु	***	***	***	***

क्र. सं.	विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	114	146	205
3	निवेशित पूंजी पर अर्जन	%	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	118	161

48. ऐसा देखा गया है कि क्षति की जांच अवधि और पीओआई के दौरान घरेलू उद्योग की निवेशित पूंजी पर लाभ, नकद प्रवाह और वापसी में वृद्धि हुई है।

ड. उत्पादकता

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	पीओआई
1	प्रति दिन उत्पादकता	एमटी	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	107	127
2	प्रति कर्मचारी उत्पादकता	एमटी	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95	105	112

49. यह देखा गया कि वर्ष 2015-16 के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में मामूली गिरावट के साथ क्षति अवधि और पीओआई की तुलना में उत्पादकता प्रति दिन के साथ साथ उत्पादकता प्रति कर्मचारी में वृद्धि हुई है।

च. रोजगार और मजदूरी

50. यह देखा गया कि घरेलू उद्योग में क्षति अवधि और पीओआई के दौरान रोजगार में वृद्धि हुई जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2016-17 के दौरान मामूली गिरावट आयी। क्षति अवधि और पीओआई के दौरान भुगतान किए गए वेतन में वृद्धि हुई। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ये मापदंड कई अन्य मापदंडों पर निर्भर करते हैं और ये घरेलू उद्योग पर पाटन के प्रभाव को प्रतिबिंबित नहीं करते।

छ. वृद्धि

51. ऐसा देखा गया कि घरेलू उद्योग ने मात्रात्मक मापदंडों, जैसे उत्पादन, बिक्री की मात्रा, क्षमता उपभोग, कर से पूर्व लाभ (पीवीटी) और निवेशित पूंजी पर वापसी के मामले में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की है।

ज. पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता

52. याचिकाकर्ता ने बताया कि उन्होंने क्षति अवधि के दौरान कोई पूंजीगत निवेश नहीं किया है।

झ. पाटन और पाटन मार्जिन का स्तर

53. ऐसा देखा गया कि चीन जनवादी गणराज्य के मामले में पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से कम है जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका के मामले में पाटन मार्जिन प्रत्येक संबद्ध देश से किए गए निर्यात के संबंध में नियमों के तहत निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।

ञ. पाटन और क्षति के जारी रहने या पुनरावृत्ति की संभावना

54. पाटन और क्षति के जारी रहने या पुनरावृत्ति की संभावना के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किए गए हैं-

- पाटन और क्षति के जारी रहने/पुनरावृत्ति की संभावना के संबंध में, चीन से संबद्ध वस्तुओं पर अन्य देशों में भी शुल्क अधिरोपित किए जाते हैं, खासकर यू.एस.ए. और यूरोपीय संघ में। यू.एस.ए. में शुल्क 20 से अधिक वर्षों से लागू हैं। ई.यू. में शुल्कों को पहले बंद करने की अनुमति दी गई थी। इनकी समाप्ति पर चीन से आयात फिर से बढ़ गया और तब से शुल्कों को लागू किया गया है। पाटन के लंबे इतिहास का देखते हुए कहा जा सकता है कि चीनी निर्यातकों को अपने उत्पादन को पाटित करने की आदत है।
- यूरोपीय संघ में, अप्रैल 2002 में चीन से परसलफेट पर वर्ष 1995 के पाटन-रोधी शुल्क आदेश को रद्द करने के बाद, प्रधिकरणों ने अक्टूबर 2007 में इन शुल्कों को दोबारा लगाया और दिसंबर 2013 में समाप्ति समीक्षा के बाद इन्हें जारी रखा गया।

- iii. चीन जनवादी गणराज्य से पीयूसी संयुक्त के सभी ग्रेडों का आयात 2016-17 तक घट रहा था और पीओआई में इसमें वृद्धि हुई थी। संयुक्त राज्य अमेरिका से आयात लगातार बढ़ रहा है। वर्ष 2006 में मूल जांच के बाद चीन से आयात घरेलू बाजार पर हावी रहे हैं।
- iv. चीन के उत्पादकों के पास अत्यधिक उत्पादन क्षमताएं हैं। यह निष्कर्ष चीन से परसल्फेटों के अमेरिकी अंतिम जांच परिणामों जोकि तीसरी समीक्षा थी और क्रमशः मार्च, 2014 और दिसंबर 2013 में चीन से पेरॉक्सोसल्फेट्स (परसल्फेट्स) के आयात पर निश्चित शुल्कों को लगाने वाली ईसी की समाप्ति समीक्षा में भी निकाला गया था। याचिकाकर्ता चीन में उत्पादकों की क्षमताओं का पता लगाने में सक्षम हैं और कुल ज्ञात क्षमता 3,54,000 मीट्रिक टन के लगभग है जबकि भारत में कुल मांग केवल 7,500 मीट्रिक टन है।
- v. एफएमसी यूएसए में एकमात्र निर्माता है जो संबद्ध वस्तु के सबसे बड़े उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है। वर्ष 2013 के अमेरिकी समीक्षा निष्कर्षों से पता चलता है कि वर्ष 2012 से घरेलू मांग में उल्लेखनीय गिरावट आई है और इसी अवधि के दौरान एफएमसी ने क्षमता बढ़ा दी थी।
- vi. अमेरिका ने निर्धारित किया है कि चीन संबद्ध वस्तु का सबसे बड़ा निर्यातक है। अमेरिका और ईसी प्राधिकारी ने चीन में उत्पादकों के साथ संबद्ध वस्तुओं की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि का निष्कर्ष निकाला। अमेरिकी निष्कर्षों के मुताबिक चीन में उत्पादकों की संख्या, मूल जांच के मुकाबले तीसरी समीक्षा में 6 गुना बढ़ गई है।
- vii. संयुक्त राज्य अमेरिका संबद्ध वस्तु का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है। अमेरिकी निष्कर्ष उस व्यापार संतुलन को प्रदर्शित करता है जोकि इसे प्रमाणित करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका से वैश्विक निर्यात से यह भी पता चलता है कि क्षति अवधि में निर्यात बढ़ता रहा है।
- viii. अमेरिका से विश्व को किए जा रहे निर्यात भारतीय बाजार को किए जा रहे निर्यातों से ज्यादा कीमत पर किए जाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका से विश्व को निर्यात लगातार बढ़ रहे हैं जोकि उनके निर्यात उन्मुखीकरण को प्रदर्शित करता है।
- ix. जब तक कि समीक्षा की न की जाए, पाटन-रोधी शुल्क लागू होने के समय से पांच साल की अवधि तक लागू रहते हैं। डब्ल्यूटीओ समझौते में अधिदेशित है कि पाटनरोधी शुल्क यथा आवश्यक लंबे समय और सीमा तक लागू रहेगा। यदि स्थिति के अनुसार 10 से अधिक वर्षों के लिए पाटनरोधी शुल्क की निरंतरता की आवश्यकता है तो उसे लागू करना आवश्यक है। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां प्राधिकरणों ने पहली और उत्तरवर्ती निर्णायक समीक्षाओं में शुल्क को जारी रखा है।
- x. ईसी और यूएसए मामलों के तथ्य समान हैं। जबकि अमेरिका और ईसी में चीन से आयात नगण्य है, भारत में ये आयात अभी भी काफी मात्रा में होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में मांग भी घट रही थी जबकि भारत में मांग लगातार बढ़ रही है। यह संबद्ध वस्तु के आयात के खिलाफ एडीडी की लेवी को जारी रखने का और भी अधिक कारण है। यदि, समान मानकों के साथ ईसी और यूएसए के प्राधिकरणों ने पाटनरोधी शुल्क को जारी रखा है, तो वर्तमान स्थिति में एडीडी जारी न रखने के लिए प्राधिकारी के पास कोई कारण नहीं है।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

55. इस संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं -

- i. याचिकाकर्ता द्वारा संबद्ध देशों के विरुद्ध पाटन और घरेलू उद्योग को परिणामस्वरूप क्षति की संभावना का कोई भी मामला उद्धृत नहीं किया गया है।
- ii. याचिकाकर्ता संयुक्त राज्य अमेरिका के विरुद्ध क्षति की संभावना और क्षति की घटना को प्रमाणित करने में असमर्थ है, क्योंकि याचिकाकर्ताओं द्वारा आयातों का एक बड़ा हिस्सा आयात किया जाता है। मैसर्स वी आर परसल्फेट ने आयातित सामान का क्रय यह जानते हुए किया कि उन्हें आयातित सामान मिल रहा है और आयात में भाग लेने के बाद, वे अब वर्तमान शुल्कों की समाप्ति की स्थिति में पाटन और क्षति की संभावना का दावा नहीं कर सकते हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

56. प्राधिकारी ने नियमों के अनुबंध II (vii) के अनुसार पाटन और क्षति की निरंतरता या पुनरावृत्ति की संभावना की जांच के लिए घरेलू उद्योग के दावे की जांच की है।
57. प्राधिकारी को प्रस्तुत की गई सभी सूचनाओं की जांच यह निर्धारित करने के लिए की गई है कि शुल्क समाप्त होने की स्थिति में पाटन अथवा क्षति की निरंतरता या पुनरावृत्ति की संभावना है या नहीं। चूंकि वर्तमान मामले में, घरेलू उद्योग ने अपने आर्थिक मापदंडों में वृद्धि देखी है, यह निर्धारित करना अधिक प्रासंगिक है कि क्या शुल्क समाप्त होने

की स्थिति में, घरेलू उद्योग में पाटन के कारण क्षति फिर से शुरू हो सकती है। प्राधिकारी ने पाटन अथवा क्षति की निरंतरता या पुनरावृत्ति की संभावना का मूल्यांकन करने के लिए घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई विभिन्न सूचनाओं पर विचार किया है।

i. पाटन और निरंतर आयात का लंबा इतिहास

58. याचिकाकर्ता द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि देश में संबद्ध वस्तुओं के निरंतर पाटन का इतिहास है। पाटन-रोधी शुल्क लगाने के बावजूद संबंधित उत्पाद अभी भी महत्वपूर्ण मात्रा में आयात किया जा रहा है। पिछली जांच में संबद्ध देशों के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन सकारात्मक और अधिक था, लेकिन वर्तमान समीक्षा के लिए पाटन मार्जिन अधिक नहीं हैं।

ii. संबद्ध देशों द्वारा धारित अत्यधिक उत्पादन क्षमता

59. **चीन:** याचिकाकर्ता द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि चीन जनवादी गणराज्य के उत्पादक परसल्फेट उत्पादित करने की बड़ी क्षमता बनाए रखते हैं। अधिशेष क्षमता के प्रमाण के रूप में, घरेलू उद्योग ने 'चीन से परसल्फेट' के विषय में अमेरिकी अंतिम जांच परिणामों जोकि तीसरी समीक्षा थी और क्रमशः मार्च, 2014 और दिसंबर 2013 में चीन से पेरॉक्सोसल्फेट्स (परसल्फेट्स) के आयात पर निश्चित शुल्कों को लगाने वाली ईसी की समाप्ति समीक्षा के निष्कर्षों को अपनाया। याचिकाकर्ताओं ने चीन में उत्पादकों की क्षमताओं का भी पता लगाया है और कुल ज्ञात क्षमता 3,54,000 मीट्रिक टन है। भारत में पूरी मांग केवल 7,850 मीट्रिक टन है। उन्होंने आगे प्रस्तुत किया है कि चीन में उत्पादकों की स्वतंत्र रूप से डिस्पोजेबल उत्पादन क्षमता पाटन-रोधी शुल्क की समाप्ति की स्थिति में पूरी घरेलू मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त है।

उत्पादक	क्षमता (एमटी)
यूक्सी काउंटी, फुज़ियान प्रोविंस तिआंडा रिऐजेंट्स लिमिटेड	11,000
याताई इलेक्ट्रोकेमिकल कंपनी लिमिटेड	58,000
शानक्सी बाओहुआ टेक्नोलॉजी कं लिमिटेड	16,000
यूडीडी हेफेई लिमिटेड	23,000
झांगजू पिंग योंगशेन्ग केमिकल कंपनी लिमिटेड	7,000
फुज़ियान जानहुआ केमिकल कं, लिमिटेड	83,000
यूनाइटेड इनीशिएटर्स	23,000
अंतिम जांच परिणामों के अनुसार उत्पादन क्षमता	
शानघाई अनसिन केमिकल कं, लिमिटेड	5,000
देगुसाआज(शां-घाई) इनिशिएटर कं, लिमिटेड	15,000
फुज़ियान जियानु योंगशेंग इंडस्ट्री कं, लिमिटेड	35,000
हेबैजेंग ग्रुप कं, लिमिटेड	27,000
हेंगशुई केमिकल कं, लिमिटेड	18,000
फुलिडा इंडस्ट्री कं लिमिटेड	15,000
झांगहुआ केमिकल्स इंडस्ट्रीयल कं, लिमिटेड	27,000
एबीसी केमिकल्स (शांघाई) कंपनी लिमिटेड	6,000
कुल	3,53,000

60. **यूएसए:** याचिकाकर्ता द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि वे अन्य संबद्ध देशों में अतिरिक्त क्षमता पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध साक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाए हैं। हालांकि, घरेलू उद्योग की बाजार जानकारी के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्पादकों के पास बड़ी क्षमताएं हैं अतः वे पाटनरोधी शुल्कों को लागू करने के बावजूद तीव्र दर पर

भारत में सामान को पाटित करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि एफएमसी संबद्ध वस्तुओं का एकमात्र उत्पादक है जो संबद्ध वस्तुओं के सबसे बड़े उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है। अमेरिकी समीक्षा निष्कर्ष से पता चलता है कि घरेलू मांग में गिरावट आई है और निर्माता की क्षमताओं में वृद्धि हुई है जो इंगित करता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में काफी अधिक अप्रयुक्त क्षमताएं हैं।

iii. संबद्ध देशों की निर्यात अनुकूलता

61. याचिकाकर्ता ने अमेरिकी निष्कर्षों को माना है जिसमें कहा गया था कि चीन विश्व में संबद्ध वस्तुओं का सबसे बड़ा निर्यातक है। अमेरिकी प्राधिकारी ने चीन में उत्पादकों के साथ संबद्ध वस्तुओं की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि भी की है।
62. यह दिखाता है कि चीनी निर्यातकों की क्षमता बढ़ रही थी। इसके अलावा, अमेरिकी निष्कर्षों के अनुसार, चीन में उत्पादकों की संख्या, मूल जांच की तुलना में तीसरी समीक्षा में 6 गुना बढ़ गई है जो क्षमताओं, अधिशेष या अन्यथा में वृद्धि दर्शाता है।
63. संयुक्त राज्य अमेरिका के संबंध में, याचिकाकर्ता ने व्यापार आंकड़े प्रस्तुत किए हैं जो दिखाते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका से विश्व में निर्यातों में लगातार वृद्धि हुई है जिससे उनकी निर्यात उन्मुखता की पुष्टि होती है। इसके अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका से भारत को किए जा रहे निर्यात में भी लगातार वृद्धि हुई है, और इसके अतिरिक्त यह दर अमेरिका द्वारा विश्व को किए जा रहे आयातों की कीमतों से निरंतर नीचे रही है, जोकि यह प्रदर्शित करता है कि भारतीय बाजार अमेरिका द्वारा पाटन के लिए एक चुनिंदा बाजार है।

क्र.सं.	विवरण	संयुक्त राज्य अमेरिका से निर्यात				
		2,013	2,014	2,015	2,016	POI
	एमटी में मात्रा					
1	भारत	603	741	844	1,315	1,413
2	अन्य देश	17,225	15,518	16,436	17,190	17,588
3	कुल	17,828	16,258	17,280	18,505	19,001
	दर अम. डा./ कि.ग्रा					
1	भारत	1.33	1.44	1.45	1.47	1.40
2	अन्य देश	2.08	2.28	2.12	1.84	1.79
3	कुल	2.05	2.24	2.09	1.82	1.76

64. याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि भारत में कुल मांग की तुलना में संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़ी उत्पादन क्षमताएं हैं, जो इंगित करती हैं कि मौजूदा शुल्कों के समाप्त होने पर संयुक्त राज्य अमेरिका से यह निर्यात मात्रा अधिक हो सकती है।

iv. तृतीय देश निर्यात और अन्य अधिकार क्षेत्रों द्वारा पाटनरोधी उपाय

65. याचिकाकर्ता ने यह उल्लेख किया है कि अन्य देश भी चीन पर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित कर रहे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका ने परसल्फेट्स के आयात और उन पर लगाए गए शुल्कों के विरुद्ध अपनी तीसरी समीक्षा को पूरा कर लिया है। हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा आयोजित समीक्षा में चीन द्वारा किए जा रहे पाटन की पुष्टि की गई है और 119.02 प्रतिशत की दर से शुल्क लगाया गया है। यूरोपीय संघ ने अक्टूबर 2007 में चीन से परसल्फेट्स पर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित किया था। इसके बाद दिसंबर 2013 में पांच साल की अवधि के लिए इसे जारी रखा गया था, और यह वर्तमान में लागू है। चीन पर लागू मौजूदा पाटन-रोधी शुल्क दर 71.8 प्रतिशत है। पाटन-रोधी शुल्क का समापन संबद्ध देशों से पाटित किए गए आयात को और बढ़ाएगा।

छ. अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

66. कम कीमत पर बिक्री, कीमत न्यूनीकरण और अल्पीकरण प्रभावों और पाटनरोधी नियमावली और करार के अधीन सूचीबद्ध अन्य संकेतात्मक मापदंडों के अनुसार यथोक्त घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति, मात्रा और उसकी कीमतों पर पाटित आयात के कीमत प्रभाव की मौजूदगी प्राधिकारी ने यह देखने की कार्यवाई की है कि क्या पाटित आयातों से इतर किसी अन्य कारक ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति में भूमिका निभाई है।

i) तीसरे देश से आयात

67. संबद्ध वस्तु के आयात का 87% संबद्ध देशों से हुआ है। अन्य देशों से आयात मात्रा के अनुसार इतने अधिक नहीं है कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने का कारण बन सके या उसका खतरा बन सके।

ii) मांग में संकुचन

68. संबद्ध वस्तुओं की मांग ने पूरी अवधि में समग्र रूप से बढ़ती प्रवृत्ति दिखाई है।

iii) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं

69. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं नहीं है जिससे घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव पड़ा हो।

iv) प्रौद्योगिकी में विकास

70. संबंधित उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई बदलाव नहीं आया है। इस प्रकार, प्रौद्योगिकी के विकास से घरेलू उद्योग की वृद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

v) खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन

71. घरेलू उद्योग उसी प्रकार के सामान का उत्पादन कर रहा है जिसे भारत में आयात किया गया है। खपत की प्रवृत्ति में संभावित परिवर्तन एक ऐसा कारक नहीं है जो घरेलू उद्योग पर किसी भी प्रभाव का कारण बन सकता हो।

vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

72. प्राधिकारी ने नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन और उत्पादकता में क्षति अवधि और पीओआई में आधार वर्ष की तुलना में बाद के वर्षों से सुधार दिखाया है।

ज. प्रकटन के बाद की टिप्पणियां

73. प्रकटन के बाद के अनुरोधों का नीचे सारांशकरण और समाधान किया गया है:

क) घरेलू उद्योग के विचार

74. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :

- क) याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि प्रकटन विवरण में अनिवार्य तथ्यों का पर्याप्त प्रकटन नहीं किया गया है। क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना के संबंध में, प्रकटन विवरण में केवल मापदंड या सूचना या सत्यापित आकड़े दिए गए हैं जो तथ्यों को सिद्ध करने में संगत हैं। विचाराधीन अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन नहीं किया गया है।
- ख) याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि सामान्य मूल्य, निर्यातक कीमत या पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए निर्यातकों द्वारा दी गई सूचना में आकड़े/सूचना हैं, जबकि सामान्य मूल्य, निर्यातक कीमत और पाटन मार्जिन तथ्य होते हैं। प्राधिकारी ने ब्योरे का प्रकटन नहीं किया है।
- ग) याचिकाकर्ताओं ने घरेलू उद्योग के लिए एक सार्थक प्रकटन जारी करने का अनुरोध किया है ताकि सार्थक टिप्पणियां की जा सकें। इसके अलावा याचिकाकर्ताओं ने सुनवाई के लिए और मामले के अनेक अनसुलझे तथ्यात्मक मुद्दों को ध्यान में रखते हुए टिप्पणियां प्रस्तुत करने के लिए अतिरिक्त समय के अपने अनुरोध को दोहराया है और प्राधिकारी के समक्ष इसे समुचित रूप से लाया जाना चाहिए।
- घ) यूएसए से संबद्ध वस्तु के किसी प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक के अभाव में प्राधिकारी यूएसए के संबंध में सामान्य मूल्य निर्धारित करने में असमर्थ हैं। इस प्रकार, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए अनुमत स्तरों पर कच्ची सामग्री और सुविधाओं, परिवर्तन लागत, ब्याज, एसजीए आदि और उत्पादन लागत पर तर्कसंगत लाभ को शामिल करके घरेलू उद्योग के ईष्टतम मानकों पर विचार करते हुए उपलब्ध तथ्यों और नियम 6(8) के अनुसार तीनों में से प्रत्येक प्रकार के लिए अलग सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। तथापि याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि सामान्य मूल्य को भारत में उत्पादन की वास्तविक लागत को विधिवत रूप से समायोजित करने के आधार पर निर्धारित किया जाना अपेक्षित है।

नियमों में मानकीकृत लागतों पर विचार करने का प्रावधान नहीं है। नियमों में उत्पादन की वास्तविक लागत पर विचार करने का प्रावधान है।

- इ) आयात कीमतों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है। अतः पाटनरोधी शुल्क के समाप्त होने पर उपभोक्ता आयातित उत्पाद को अपना लेंगे, जिससे उत्पाद के आयातों में भारी वृद्धि हो जाएगी।

ख) विरोधी हितबद्ध पक्षों के विचार

75. विरोधी हितबद्ध ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :

- क) आयातक ने दलील दी है कि मै. वी. आर. परसलफेट्स (एक याचिकाकर्ता) ने इस तथ्य का प्रकटन नहीं किया है कि उन्होंने याचिका के समय पर संबद्ध देश से सामग्री का आयात किया है और हमारी समझ से पक्षकार याचिका दायर करते समय प्राधिकारी को कोई गलत विवरण या तथ्यों को नहीं छुपा सकता है। यदि कोई याचिकाकर्ता आयातकों से आयातित सामग्री खरीदता/व्यवस्था करता है और उसे तैयार करता है और उसे अंतिम प्रयोक्ता को देता है तो ऐसे कार्यकलाप को आयात माना जाना चाहिए। यदि ऐसी परिपाटी की अनुमति है तो उससे याचिकाकर्ता द्वारा नियम 2(ख) के प्रावधानों अर्थात् याचिकाकर्ता द्वारा आयात हो जाएंगे।
- ख) याचिकाकर्ता द्वारा आयात के संदर्भ में प्रकटन विवरण में यह बताया गया है कि खरीदी गई मात्रा स्वयं के उत्पादन, भारतीय उत्पादन और कुल उत्पादन के संबंध में मामूली है। तथापि, वास्तविक मात्रा या प्रतिशत के संबंध में कोई सूचना नहीं दी गई है जिससे हम यहां कोई टिप्पणी कर पाएं। निरंतर आयात मांग आपूर्ति विशिष्ट हैं और लागू एडीडी के उन्मुख नहीं हैं।
- ग) प्रकटन में यह भी दर्शाया गया है कि चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण कम कीमत पर बिक्री पीओआई और पीओआई के बाद से ऋणात्मक हैं जबकि यूएसए से पीओआई के लिए यह नगण्य हैं और पीओआई के बाद ऋणात्मक हैं। यह स्थिति स्पष्ट रूप से इस बात को सिद्ध करती है कि घरेलू उद्योग वर्तमान शुल्कों के समाप्त होने की स्थिति में किसी पाटन या किसी क्षति की संभावना के अधीन नहीं है। घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में ऐसे भारी विकास को देखते हुए जिससे वह किसी संभावित क्षति के प्रति खतरे में नहीं है, शुल्क को समाप्त कर दिया जाना चाहिए।
- घ) निर्यातक देशों में उत्पादकों के पास अधिक क्षमताएं वर्तमान एडीडी के समाप्त होने पर क्षतिकारी पाटन की संभावना के तथ्य को निष्कर्ष रूप में नहीं दर्शाती है।
- इ) घरेलू उद्योग की समग्र आर्थिक दशा काफी अच्छी है। मात्रा और मूल्य संबंधी सभी मापदंडों में पूरी क्षति अवधि के दौरान तेजी से वृद्धि हुई है। आर्थिक मापदंडों के संबंध में डीआई की स्थिति दर्शाती है कि शुल्क ने अपना प्रयोजन पूरा कर लिया है यह भी कि पाटन के क्षतिकारी प्रभाव अब समाप्त हो गए हैं और डीआई बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम है। घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में ऐसे भारी विकास को देखते हुए जिससे वह किसी संभावित क्षति के प्रति खतरे में नहीं है, शुल्क को समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

76. यह नोट किया जाता है कि प्रकटन के बाद की स्थिति में उठाए गए मुद्दों की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है और उक्त संगत पैराग्राफों में उनका समुचित समाधान किया गया है।

झ. निष्कर्ष

77. हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए मुद्दों और किए गए अनुरोधों और इस जाँच परिणाम में यथा अभिलिखित उपलब्ध तथ्यों की जांच करने के बाद, प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि :

- घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में क्षति संबंधी मापदंडों के संबंध में काफी सुधार हुआ है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि कथित पाटित आयातों से घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।
- चीन जन. गण. के मामले में पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से कम है। इसका अर्थ है कि उनका स्वयं का बाजार उनके उत्पादन की खपत करने में समर्थ है। इसलिए चीन जन. गण. से पाटन की संभावना का कोई साक्ष्य नहीं है यद्यपि उनके पास पीयूसी की भारी उत्पादन क्षमता है।
- जैसा घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध किया गया है, विश्व को अमरीकी निर्यात भारतीय बाजार को किए गए निर्यातों से उच्चतर कीमतों पर किया गया है। इसका अर्थ है कि भारतीय बाजार उनका लक्ष्य देश नहीं है

क्योंकि भारत से निर्यात प्राप्ति उनके निर्यात के किसी अन्य देश से कमतर है। अतः ऐसा कोई तर्क नहीं है कि शुल्क समाप्त होने पर यूएसए से पाटन की पुनरावृत्ति होगी।

ब. सिफारिश

78. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत की गई और उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को प्रदान की गई थी और पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना प्रदान करने के लिए घरेलू उत्पादकों, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं उनके कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू और संपन्न करने के बाद यह सिद्ध हो गया है कि संबंध देशों से संबद्ध आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो रही है और ऊपर दिए गए कारणों के आधार पर पाटन आयातों और घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंधी नहीं है। प्राधिकारी का यह विचार है कि वर्तमान जांच में पाटनरोधी शुल्क लागू करने की आवश्यकता नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी चीन जन. गण. और यूएसए के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पेरॉक्सोसल्फेट्स (परसल्फेट) के संबंध में पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश नहीं करना उचित समझते हैं।
79. इस अधिसूचना के विरुद्ध कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और मै. ज़िंदल पॉली फिल्म लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी डब्लू. पी. (सिविल) सं. 8202/2017 मामले में माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं महानिदेशक

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)

FINAL FINDINGS NOTIFICATION

New Delhi, the 14th December, 2018

(Case No. SSR-4/2018)

Subject: Sunset Review of Anti-dumping duty imposed on the imports of Peroxosulphate (Persulphate) originating in or exported from People's Republic of China and U.S.A.

F. No. 7/5/2018/DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Rules) thereof; the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) had initiated the original anti-dumping investigation against import of Peroxosulphate also known as Persulphates (hereinafter also referred to as the subject goods), originating in or exported from People's Republic of China and Japan for which anti-dumping duties were recommended vide Notification No.14/1/2006-DGAD dated 20.07.2007. Thereafter, the duties were reviewed in sunset review investigation and recommendations were notified vide Notification No. 15/9/2011-DGAD dated 12.3.2013. Accordingly, Customs Notification No. 11/2013-Customs (ADD) dated 16.5.2013 was issued for continuation of duties against China PR and Japan.

2. And whereas another anti-dumping investigation was conducted by the Authority against Taiwan, Turkey and USA for which anti-dumping duties were recommended vide Notification No. 14/9/2012-DGAD dated 4.3.2014 against Taiwan & USA only. The duties were imposed vide Customs Notification No. 22/2014-Customs (ADD) dated 16.5.2014 and the same are currently in force against USA and Taiwan till 15.5.2019.
3. And whereas, M/s Calibre Chemicals Pvt. Ltd, M/s VR Persulphates and M/s Yoyo Chemicals (hereinafter also referred to as "Petitioners" or "Applicants") filed an application in the present case before the Designated Authority in accordance with the Act and the Rules for initiating sunset review of the anti-dumping duty on imports of Peroxosulphates (Persulphates) originating in or exported from China PR and U.S.A. (hereinafter also referred to as the subject countries) and requested for extension

of anti-dumping duties on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.

4. And whereas, the Authority on the basis of prima facie evidence submitted by the applicants to justify initiation of sunset review investigation issued a public notice vide Notification No. 7/5/2018-DGAD dated 20th March, 2018 to examine whether the expiry of the said duties on the import of the subject goods originating in or exported from the subject countries are likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. The validity of the antidumping duty on the imports of the subject goods from China PR were extended by the Central Government up to 14.5.2019, vide Notification No. 26/2018-Customs (ADD), dated 14th May, 2018.
5. The scope of the present review covers all aspects of the original investigation concerning imports of the above goods, originating in or exported from the subject countries.

A. PROCEDURE

6. Procedure described below has been followed with regard to this investigation, after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority:
 - i. The Authority sent a copy of the initiation notification to the Embassy of the subject countries in India, known producers/exporters from the subject countries, known importers/users in India, other Indian producers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
 - ii. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known producers/exporters and to the Embassy of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) of the Rules supra.
 - iii. The Embassies of the subject countries in India were also requested to advise the exporters/producers from the subject countries to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the producers/exporters was also sent to them along with the names and addresses of the known producers/exporters from the subject countries.
 - iv. The Authority sent Exporter's Questionnaire and Supplementary Questionnaire to the following known producers/exporters to elicit relevant information in accordance with Rule 6(4) of the Rules :
 - a. M/s Industrial Chemicals Group
 - b. M/s FMC Corporation
 - c. M/s E.I. Dupont Nemours
 - d. M/s Hebei Jiheng Group Co. Ltd.
 - e. M/s Fulida Industry Co. Ltd.
 - f. M/s Dry Chlorine Corp (DCC)
 - g. M/s Shanxi Baohua Technologies Co. Ltd.
 - h. M/s Zhangzhou Ping Yongsheng
 - i. M/s Yatai Electrochemical Co. Ltd.
 - v. In response to the above notification, none of the exporters/producers responded.
 - vi. The Authority sent Importer's Questionnaires to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
 - a. M/s Nicholas Piramal India Ltd
 - b. M/s Gujarat Themis Biosyn Ltd
 - c. M/s Padma Agencies
 - d. M/s Aurobindo Pharma ltd
 - e. M/s Novartis India Ltd.

- f. M/s Artek Surfin Ltd
 - g. M/s Zydex Industries
 - h. M/s Venus Insulators Pvt. Ltd.
- vii. The following importers of the subject goods responded by filing questionnaire responses.
 - a. M/s Chemical Corp. Pvt. Ltd.
 - b. M/s Jay Chemical Industries Ltd.
 - c. M/s Shree Raj Chemicals
 - d. M/s Visen Industries Ltd.
- viii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- ix. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to provide the transaction-wise details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation. The Authority has relied upon the DGCI&S data for computation of the volume of imports and required analysis after due examination of the transactions.
- x. The Non-injurious Price (NIP) based on the cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-dumping Rules has been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry. Therefore, the NIP computed for POI has been considered for comparison purpose.
- xi. The Authority held an oral hearing on 18th June, 2018 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance to Rule 6 (6), which was attended by the representatives of domestic industry and other interested parties. All the parties who presented their views in the oral hearing were requested to file written submissions of their views expressed orally. The parties were also advised to collect written submissions made by the opposing parties and were requested to submit their rejoinders thereafter.
- xii. The verification of the information provided by the domestic industry was carried out to the extent considered necessary. Only such verified information with necessary rectification, wherever applicable, has been relied upon.
- xiii. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present review investigation is 1st October, 2016 to 30th September, 2017 (12 months). The examination of trends in the context of injury analysis covered the periods April 2014-March 2015, April 2015-March 2016, April 2016-March 2017 and the POI.
- xiv. The submissions made by the interested parties during the course of this investigation, wherever found relevant, have been addressed by the Authority, in this Final Finding.
- xv. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.
- xvi. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the views/observations on the basis of the facts available.
- xvii. A Disclosure Statement was issued to interested parties on 20.11.2018 containing essential facts under consideration of the Designated Authority, giving time up to 1.12.2018 to furnish comments, if

any, on Disclosure Statement. The Authority has considered post disclosure comments received from interested parties appropriately.

xviii. ‘***’ in this Final Finding represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

xix. The exchange rate for the POI has been taken by the Authority as Rs.66.70 = 1 US\$.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

View of the Domestic industry

7. The views of the domestic industry are as follows:

- i. The product under consideration in this review investigation is ‘Peroxosulphates’ commonly known as ‘Persulphates’. It is a group of closely related compounds. They are produced as Alkali Metal salts which include Ammonium Persulphates (APS), Potassium Persulphates (PPS) and Sodium Persulphates (SPS). The Chemical Formulae of these Persulphates are, respectively, $(\text{NH}_4)_2\text{S}_2\text{O}_8$, $\text{K}_2\text{S}_2\text{O}_8$, $\text{Na}_2\text{S}_2\text{O}_8$. The three types of persulphates have the same end use as an initiator and oxidizing agent in the textile and chemical industries and one can be substituted for another. All three salts are nothing but different forms of same product.
- ii. The subject goods are classified in Chapter 28 of the Customs Tariff Act, 1975 under subheading 2833 40 and under subheading 283340 00 under the Indian Trade Classification (Based on Harmonized Commodity Description and Coding system).
- iii. This being a sunset review investigation the scope of the product under consideration remains the same as that in the previous investigations conducted for the concerned product. The examination done by the authority in Final Finding No.15/9/2011-DGAD dated 12.3.2013 in Sunset Review Anti-dumping investigation concerning imports of ‘Peroxosulphates’ (also known as ‘Persulphates’) originating in or exported from Japan & China PR and Final Finding No. 14.9.2012 dated 4.3.2014 in Anti-dumping investigation concerning imports of ‘Peroxosulphates’ (also known as ‘Persulphates’) originating in or exported from Taiwan, Turkey and USA is to be relied upon.
- iv. There is no difference in the technology employed and the quality of the domestic and imported product. Present investigation is a review investigation. The Designated Authority has examined the issue of product under consideration and like article in the original investigation, which is relied upon.
- v. The three types of subject goods do not make the three different types of the PUC different. The three different types of persulphates, namely, potassium persulphate, sodium persulphate and ammonium persulphate form one product under consideration. This being the fourth investigation for the product under consideration, the scope of the product under consideration has already been decided and has remained the same even in the previous investigations. The European Commission and The US ITC have held that the three types of Persulphate constitute one article.
- vi. The difference in costs and prices of two products does not render them different article. The product types should be considered as one product under consideration in the same manner as caustic soda lye and flake are considered as one product. Lack of perfect interchangeability of the product types at customers end does not render them different articles. The producers can switch between different types of persulphates.
- vii. The Assay of VR Persulfates SPS is also 99.0% mostly above 99.5% which is same as Peroxychem Spec (exporter from USA); Active Oxygen of Peroxychem and the petitioners is same. Baseless claims have been made with regards to caking of the product. The domestic industry adds Aerosil which is an anti-caking agent, which does not allow the SPS to cake. The alleged black particles are also found in the products of the exporting producers.
- viii. The Authority has time and again held that difference in quality does not lead the article to be different. Imported goods and domestically produced goods serve the same end use. Production and sales of the domestic industry increased over the injury period which itself shows that consumers have no problem in using goods produced by the domestic industry. Consumers may not wish to adopt themselves to different products only because of the internal requirements. It is not a question

of technical compulsions but merely adaptability of a party that the company does not wish to buy material from other sources.

Views of the opposing interested parties

8. The views of the Other interested parties are as follows -
 - i. Since three grades of PUC are under investigation, APS, SPS and PPS, having different cost and price, there should be separate investigation for all of them.
 - ii. Goods produced by the domestic industry were not purchased by Indian users due to following reasons - The test result of the assay of Peroxychem USA persulphates is 99% and above typically 99.4% and above as compared to local producer having an assay lower than 99%. One of the end use of this product is that of a Catalyst where higher assay is required; Active O₂ content in USA produced subject goods is more suited than domestically produced; USA produced subject goods do not start caking after sometime, like domestically produced do; Black particle found in some cases of domestic produced subject goods.

Examination by the Authority

9. The product under consideration in this review investigation is 'Peroxosulphates' commonly known as 'Persulphates'. Peroxosulphates are a group of closely related compounds. These are produced as Alkali Metal salts which include Ammonium Persulphates (APS), Potassium Persulphates (PPS) and Sodium Persulphates (SPS). The Chemical Formulae of these Persulphates are, respectively, (NH₄)₂S₂O₈, K₂S₂O₈, Na₂S₂O₈. The three types of persulphates have the same end-uses as an initiator and oxidizing agent in the textile and chemical industries and one can be substituted for another. All three salts are nothing but different forms of same product.
10. They are classified in Chapter 28 of the Customs Tariff Act, 1975 under HS Code 28334000. It is clarified that the HS codes are only indicative and the product description shall prevail in all circumstances.
11. With regard to the argument of the interested party that three types of persulphates should not be considered as single product, the Authority notes that potassium persulphate, sodium persulphate and ammonium persulphate are merely different types of persulphates. Different types of the product under consideration have been treated as one single product in past by the Designated Authority. Petitioner submitted in this regard that USA and EU have also conducted anti dumping investigations on subject goods, wherein all types of persulphates were considered as one product after examining their physical and chemical properties, interchange ability etc. The Authority has in all previous investigations considered all types of persulphates as one product. As regards the different price levels for the different product types, it is noted that price differences between product types per se do not justify the conclusion that a certain product type should be considered as a different product.
12. After considering the information on record, the Authority holds that there is no known difference in product under consideration exported from subject countries and the subject product produced by the Indian industry. The subject goods produced by the domestic industry is comparable to the subject goods exported from subject countries in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
13. The Authority holds that the subject goods produced by the applicant domestic industry are like articles to the product under consideration exported from the subject countries, in accordance with the AD Rules.

C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING.

Views of the domestic industry

14. Following submissions have been made by the domestic industry:
 - i. The application was filed by M/s Calibre Chemicals Pvt. Limited, M/s VR Persulfates and M/s Yoyo Chemicals (referred to as Petitioners). There is one other producer of the subject goods in the country, namely, M/s Gujarat Persalts Pvt. Limited.

- ii. The petitioners have not imported the subject goods during the injury investigation period. The petitioners are neither related to an importer in India nor to any exporter from the subject countries. Production of the petitioners constitutes “a major proportion” of total Indian production. Petitioners fulfil and satisfy the requirement of standing within the meaning of the Anti-dumping Rules.
- iii. M/s Chemical Corp is an importer of the subject goods who has cleared the goods for home consumption. M/s VR Persulphates purchased the material from Chemical Corp. Exclusion of domestic producers from the scope of the domestic industry does not arise unless the domestic producer has itself imported or is related to an importer or exporter thereof. M/s VR Persulfates purchased sodium persulphate, only at the instance of the consumer, who is regularly procuring one type of PUC from the company, but wanted other type of PUC from USA and at the same time, wanted the company to do modifications to the product supplied by the US producer.
- iv. The core business of the producer is the production and sale of subject goods. Further, imports made were not as a defensive action. In any case, if M/s VR Persulphates was to be excluded as domestic industry, the extent of improvement shown by the domestic industry would reduce.

Views of the opposing interested parties

15. The following submissions have been made in this regard –
 - i. M/s VR persulphates has been importing subject goods from M/s Chemical Corp Pvt Ltd, and may have also imported subject goods from USA also, thus, misleading Authority by stating otherwise.
 - ii. Petitioner should not claim that imports coming from USA are a ground for likelihood of dumping and injury, when they themselves are importing the same goods.

Examination by the Authority

16. The application was filed by M/s Calibre Chemicals Pvt. Limited, M/s VR Persulfates and M/s Yoyo Chemicals. There is one other producer of the subject goods in the country, namely, M/s Gujarat Persalts Pvt. Limited. The production by the participating producers constitutes major proportion.
17. The claims that M/s V.R. Persulphates has imported the subject goods was examined. It is noted that as per their own admission M/s V.R. Persulphates has bought the subject goods from one importer, namely M/s Chemical Corp Pvt Ltd, the petitioner clarified that (a) M/s Chemical Corp, who is a trader importer, for the purpose of manufacturing/processing the goods as per the requirements of the end user customer. The quantities purchased are insignificant in relation to its own production, Indian production and total imports. In view of the same the Authority had considered it appropriate to hold that the applicant producers satisfy the criteria of domestic industry in terms of Rule 2(b) and Rule 5 of the Rules.

D. MARKET ECONOMY TREATMENT (MET), NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DETERMINATION OF DUMPING MARGIN

Views of the Domestic industry

18. The domestic industry inter alia submitted as follows:
 - i. One of the provisions of Accession protocol has expired on 11th December, 2016. The Designated Authority should however proceed with present investigation considering Chinese producers as producers are not operating in non-market economy conditions because the costs and prices in China do not reasonably reflect the market forces. Para 8 to Annexure-I specifies the parameters which should be considered for grant of market economy status. Since Chinese companies have been denied market economy status, for the reasons mentioned in Para 8 of Annexure-I, till December, 2016, and the present POI includes part of the period before accession therefore the petitioner submits that the Chinese producers are required to be treated as non-market economy companies till such time the investigation period includes the period specified in Accession protocol.
 - ii. Chinese producers are required to be treated as companies operating under non-market economy environment and the Authority may proceed to determine the normal value on the basis of Para 7 of Annexure-I.

- iii. Normal value could not be determined on the basis of price of like article in an appropriate market economy third country for the reason that the relevant information is not publicly available. The petitioner has claimed consideration of normal value on the basis of cost of production in India duly adjusted.
- iv. The dumping margin from China is not only significant, but also substantial, thus establishing existence of significant dumping of the product under consideration in India. The import volume of China has remained significant throughout the present injury period, despite anti-dumping duty in force.
- v. Considering the production capacities available with Chinese producers and their high export orientation, dumping would continue and even intensify in the event of cessation of anti-dumping duty.
- vi. For the U.S.A. also the petitioners have claimed normal value on the basis of cost of production in India, duly adjusted because no other reliable information is available in public domain.

Views of the opposing interested parties

19. No submissions have been made by the interested parties in this regard.

Examination by the Authority

20. At the stage of initiation, the petitioners proceeded with the presumption by treating China PR as a non-market economy country. Upon initiation, the Authority advised the producers/exporters in China PR to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of whether their data/information could be adopted for the purpose of normal value determination. The Authority sent copies of the questionnaire to all the known producers/ exporters for providing relevant information in this regard. However, none of the Chinese producers/exporters have filed any questionnaire response.
21. The Authority notes that none of the producers and exporters of the subject goods from the USA have submitted the exporter's questionnaire response in the facts & circumstances of the present case. In view of non-cooperation, the Authority is unable to determine normal value in case of China PR & USA.
22. In view of non-cooperation from any producer exporter from the subject countries, the Authority is not able to determine individual dumping margin and is constrained to proceed with the principles of best available information. The Authority determined normal value as per facts available in terms of Rule 6(8) of the Rules. Normal value for the subject goods imported from China PR and USA into India has been constructed considering optimum consumption norms of the domestic industry for raw materials and utilities, conversion cost, interest, SGA, etc. at the levels allowed for the domestic industry including reasonable profit on the cost of production. Separate normal value has been determined for each types of persulphate. Accordingly, Constructed Normal value determined is as shown in the dumping margin table below.
23. The Authority notes that none of the exporters have furnished information to the authority in the form and manner prescribed which could be used for determination of the export price and individual dumping margin. Therefore, the Authority has determined the export price for producers/exporters in subject countries on the basis of the DGCIS transaction wise data. The export price has been adjusted on account of Ocean Freight, Marine Insurance Commission, Bank Charges, Port Expenses and Inland Freight Charges to arrive at the net export price at ex-factory level. Separate weighted average export price to India has been determined for each type of persulphates which is provided in the dumping margin table below. Accordingly, the net export price at ex-factory level for exports from subject countries is as shown in the dumping margin table below.

Dumping Margin of the subject countries

24. The dumping margin for subject countries has been determined by comparing type wise normal value and net export price at ex-factory level for the subject goods. The table below shows the weighted average dumping margins for each of the subject countries.

S. No.	Product Type	Imports	CNV	NEP	DM		
		MT	US\$/Kg	US\$/Kg	US\$/Kg	%	Range
	China						
1	Ammonium Persulphate	498	***	***	***	***	
2	Potassium Persulphate	104	***	***	(***)	(***)	
3	Sodium Persulphate	25	***	***	***	***	
4	Total Import Volume	627	***	***	***	***	0-5
	USA						
6	Ammonium Persulphate	303	***	***	***	***	
7	Potassium Persulphate	-	-	-	-	-	
8	Sodium Persulphate	772	***	***	***	***	
9	Total Import Volume	1,074	***	***	***	***	10-20

25. It is seen that the dumping margin in case of China PR is de-minimis, whereas dumping margin in case of USA is above de-minimis limits.

E. DETERMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

Views of the Domestic industry

26. As regards injury and causal link, the domestic industry has made submissions as under :

- i. The demand for the product under consideration increased throughout the injury.
- ii. The import volume from the subject countries has increased throughout the injury period and has a considerable hold in the Indian market. The increase in volumes of subject imports is despite the existing duties in force. Had the same not been in force, the entire Indian market would have been catered to by the subject imports.
- iii. Landed prices of the subject goods, have remained below the selling price of the domestic industry and have thus led to a positive price undercutting. Even grade wise there is significant price undercutting for all the grades being exported by both the subject countries.
- iv. Low prices of imports have not yet caused any suppressing/depressing effects because of duties being in force but are clear indicators of the price movement of imports as well as the prices of the domestic industry in case the current duties are allowed to cease.
- v. There has been significant increase in imports of the subject goods. The imports are undercutting the prices of the domestic industry
- vi. The capacity of the domestic industry remained the same while the production, sales and the capacity utilization of the domestic industry have increased.
- vii. The market share of the domestic industry as a whole has declined while that of the subject imports has increased.
- viii. Profits before interest and tax, ROCE and Cash Profits are all rising over the injury period but to determine the likely situation of profitability of the domestic industry, petitioner considered the landed price of imports and determined profitability of the domestic industry had the domestic industry sold the product at these prices. The domestic industry would have suffered significant financial losses, had the domestic industry supplied the product at prices matching the landed price of imports. All price parameters of the domestic industry would very steeply decline in the event of cessation of anti-dumping duties. Thus, improvement in the performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow and ROI is the remedial effects of the existing ADD.
- ix. Inventory levels of the domestic industry have increased as compared to the base year levels.

- x. Employment levels of the domestic industry and wages paid have also increased over the injury period.
- xi. Impact of dumping of the subject goods from the subject countries has been adverse on the domestic industry. It has remained positive and significant.

Views of opposing interested parties

27. No submissions have been made by the other interested parties in this regard.

Examination by the Authority

28. The Authority has examined the submissions made by the interested parties with regard to the injury in accordance with the Anti-dumping Rules.
29. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority has considered relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules.

I. Volume Effect of dumped imports and impact on domestic industry

a. Total Demand and Market Share

30. The demand or consumption of the product in India is the sum of domestic sales of all the Indian producers and imports from all sources. The demand so assessed is given in the table below.

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Subject Countries imports	MT	1068	1221	1424	1701
2	Other Countries imports	MT	25	115	225	258
3	Domestic industry	MT	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	104	109	121
4	Other Indian Producers	MT	***	***	***	***
4a	Trend	Indexed	100	90	76	98
5	Demand/consumption	MT	6,157	6,451	6,826	7850

31. It is seen that the demand for the product under consideration has increased throughout the entire injury period and the POI.

b. Import volumes and share of subject countries

32. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The volume of imports of the subject goods from the subject countries have been analyzed as under:

SN	Particulars	UOM	2014-15	2015-16	2016-17	POI
	Import Volume					
1	Subject Countries	MT	1,068	1,221	1,424	1,701
1a	China	MT	731	645	477	627
1b	USA	MT	337	576	947	1,074
2	Other Countries	MT	25	115	225	258
3	Total	MT	1,093	1,336	1,649	1,959
	Share in Imports					
1	Subject Countries	%	98	91	86	87
1a	China	%	67	48	29	32

1b	USA	%	31	43	57	55
2	Other Countries	%	2	9	14	13
3	Total	%	100	100	100	100
Subject Countries Imports in relation to						
4a	Indian Production	%	***	***	***	***
4a(i)	Trend	Indexed	100	119	131	138
4z	Consumption	%	17	19	21	22

33. It is noted that the import volume from the subject countries has increased throughout the injury period and the POI. Imports from other countries has also increased significantly throughout the injury period and the POI as compared to base year, however, the share is not as large as compared to the share of subject countries. The imports from the subject countries constitute majority of imports during the injury period and POI. Imports in relation to production and consumption are not very large and have remained consistent with small increase in the entire injury period.

II. Price Effect

34. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it is required to be analyzed whether there has been a significant price undercutting by the alleged dumped imports as compared to the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices or prevent price increases, which otherwise would have occurred in normal course. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from subject countries has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from subject countries.

a. Price Undercutting

35. The DI has given information regarding the impact of alleged dumped imports by comparing the landed value of the product with the average selling price of the domestic industry, at the same level of trade. The price undercutting has been determined separately for each type of the product under consideration and thereafter weighted average for the product under consideration. It is thus seen that the price undercutting is positive.

SN	Product Type	Imports	NSR	Landed value	Price Undercutting		
		MT	Rs/Kg	Rs/Kg	Rs/Kg	%	Range
	China						
1	Ammonium Persulphate	498	***	55.24	***	***	
2	Potassium Persulphate	104	***	110.83	***	***	
3	Sodium Persulphate	25	***	90.69	***	***	
4	Total Import Volume	627	***	65.87	***	***	15-25
	USA						
5	Ammonium Persulphate	303	***	63.65	***	***	
6	Potassium Persulphate	-	***	-	-	-	
7	Sodium Persulphate	772	***	95.98	***	***	
8	Total Import Volume	1,074	***	86.86	***	***	10-20

b. Price Underselling

36. The DI has given information regarding price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from subject countries by comparing landed value of imports with the NIP of DI. The comparison has been done product type wise and thereafter weighted average has been computed for the PUC.

Sl. No.	Product Type	Imports	NIP	Landed Price	Price Underselling		
		MT	Rs/Kg	Rs/Kg	Rs/Kg	%	Range
	China						
1	Ammonium Persulphate	498	***	55.24	***	***	-
2	Potassium Persulphate	104	***	110.83	(***)	(***)	-
3	Sodium Persulphate	25	***	90.69	***	***	-
4	Total Import Volume	627	***	65.87	(***)	(***)	Negative
	USA						
5	Ammonium Persulphate	303	***	63.65	(***)	(***)	-
6	Potassium Persulphate	-	-	-	-	-	-
7	Sodium Persulphate	772	***	95.98	***	***	-
8	Total Import Volume	1,074	***	86.86	***	***	0-10

Post-POI

SN	Product Type	Imports	NIP	Landed Price	Price Underselling		
		MT	Rs/Kg	Rs/KG	Rs/Kg	%	Range
	China						
1	Ammonium Persulphate	118	***	59.30	(***)	(***)	-
2	Potassium Persulphate	-	-	-	-	-	-
3	Sodium Persulphate	-	-	-	-	-	-
4	Total Import Volume	118	***	59.30	(***)	(***)	Negative
	USA						
5	Ammonium Persulphate	18	***	78.93	(***)	(***)	-
6	Potassium Persulphate	19	***	101.04	(***)	(***)	-
7	Sodium Persulphate	133	***	96.68	***	***	-
8	Total Import Volume	170	***	95.29	***	(***)	Negative

37. It is seen that the price underselling on account of imports of the subject goods from the China PR is negative for POI as well as post POI whereas from USA it is nominal for POI and negative for post POI.

c. Price suppression and depression effects of the dumped imports

38. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the DI has given information regarding the changes in the costs and prices over the injury period. The position is shown as per the table below:

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Cost of Sales	Rs./Kg	***	***	***	***
1a	Trend	Index	100	102	100	89
2	Selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
2a	Trend	Index	100	103	108	108
3	Landed Price	Rs./Kg	75	78	80	79
3a	Trend	Index	100	105	107	106

39. It is seen that the cost of sales has remained to almost a same level during the injury period with a slight increase during 2015-16, however, the same declined during POI as compared to the previous years and base year. The selling price of the domestic industry has increased throughout the injury period and POI as compared to the base year. The landed price of imports has remained almost to a same range throughout the injury period and POI as compared to the base year and is lower than the selling price of the DI. It is noted that though the cost of sales declined during the POI, but DI was able to increase its selling price. Thus the imports are not causing any adverse impact by way of price suppression and depression on the domestic industry prices.

Examination of Economic Parameters relating to Domestic Industry

40. Annexure II to the AD Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the AD Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

41. Accordingly, various economic parameters of the domestic industry are analyzed herein below:

a. Production, Capacity, Capacity utilization and Sales

42. The performance of the domestic industry with regard to capacity, production, capacity utilization and sales is as follows:

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Capacity	MT	***	***	***	***
1a	Trend	Index	100	100	100	100
2	Production	MT	***	***	***	***
2a	Trend	Index	100	102	110	125
3	Capacity Utilization	%	***	***	***	***
3a	Trend	Index	100	103	110	126
4	Domestic sales	MT	***	***	***	***
4a	Trend	Index	100	104	109	121

43. It is seen that the capacity of the domestic industry remained the same throughout the injury period. The capacity utilization, production and the sales of the domestic industry increased throughout the injury period and POI.

b. Market Share in demand

44. The effects of the dumped imports on the market share of the domestic industry was examined.

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Subject Countries	%	17	19	21	22
2	Other Countries	%	1	2	3	3
3	Domestic industry	%	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	100	100	95
4	Other Indian Producers	%	***	***	***	***
4a	Trend	Indexed	100	83	67	78

45. It is seen that the market share of the domestic industry remained same during the injury period, however, declined slightly during POI whereas share of the subject countries increased throughout the injury period and POI. The share of other countries is insignificant. Share of other Indian producers declined throughout the injury period with a slight increase during POI as compared to the previous year.

c. Inventories

Particulars	UOM	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Average Stock	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	88	75	133

46. It is seen that the average inventory levels with the domestic industry declined during the injury period whereas increased during the POI, however in view of the absence of data regarding average permissible inventory levels, the impact of increased inventory cannot be gauged.

d. Profits, return on investment and cash flow

47. Performance of the domestic industry with regard to profit, return on investment and cash flow is as follows:

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Profit/loss	Rs.Lacs	***	***	***	***
1a	Trend	Index	100	115	157	228
2	Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
2a	Trend	Index	100	114	146	205
3	Return on Capital Employed	%	***	***	***	***
3a	Trend	Index	100	103	118	161

48. It is seen that there has been an increase in the profits, cash flow and return on capital employed of the domestic industry throughout the injury investigation period and POI.

e. Productivity

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Productivity per day	MT	***	***	***	***
1a	Trend	Index	100	100	107	127
2	Productivity per employee	MT	***	***	***	***
2a	Trend	Index	100	95	105	112

49. It is seen that productivity in terms of, productivity per day as well as per employee, has increased over the injury period and POI with a slight decline in productivity per employee during 2015-16.

f. Employment and wages

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Employment	Nos	***	***	***	***
1a	Trend	Index	100	107	105	112
2	Wages	Rs.Lacs	***	***	***	***
2a	Trend	Index	100	113	129	138

50. It is seen that the employment with the domestic industry increased over the injury period and POI with a slight decline during 2016-17 as compared to previous year. The wages paid have increased throughout the injury period and POI. The Authority notes that these parameters are dependent on a number of other parameters and not reflective of impact of dumping on the domestic industry.

g. Growth

51. It is seen that the domestic industry has registered positive growth in terms of volume parameters, such as production, sales volume, capacity utilization, Profit before Tax (PBT) per unit and return on capital employed.

h. Ability to raise Capital Investment

52. The petitioner stated that they have not made any capital investment during the injury period.

i. Level of dumping & dumping margin

53. It is seen that the dumping margins in case of China PR is less than the de-minimis limits whereas dumping margin in case of USA is more than the de-minimis limit prescribed under the Rules in respect of exports made from each of the subject countries.

F. LIKELIHOOD OF CONTINUATION OR RECURRENCE OF DUMPING AND INJURY

54. The following submissions have been made by the domestic industry with regards to likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury -

- As regards likelihood of continuation/recurrence of dumping and injury, the subject goods from China have been subject to duties in other countries also, most notably from the U.S.A and the EU. The duties in U.S.A. have been in force for more than 20 years. The duties in the E.U. were first allowed to cease. Upon cessation the imports from China again surged and since then the duties have been in force. Coupled with the long history of dumping and it can be said that the Chinese exporters are habitual of dumping their produce.
- In EU, after revoking 1995 antidumping duty order on Persulphates from China in April 2002, the authorities re-imposed these duties in October 2007 and have been continued after conducting expiry review in December 2013.
- Imports from China PR for all grades of the PUC combined were declining till 2016-17 and then increased in the POI. Imports from USA have increased consistently. Imports from China have been dominating the domestic market since the original investigation back in 2006.
- Chinese Producers have massive excessive production capacities. The same has been held in the US final findings of 'Persulphates from China' which was a third review and also in the expiry review of EC extending definitive duties on imports of peroxosulphates (persulphates) from China in March, 2014 and December, 2013 respectively. Petitioners have been able to ascertain capacities of the producers in China and the total known capacities comes to the tune of 3,54,000 MT whereas the total demand in India is only of 7,500 MT.

- v. FMC is the sole producer in USA which is one of the largest producer and exporter of subject goods. The US review findings of 2013 shows that there has been significant decline in domestic demand since 2012 and during the same period FMC had enhanced capacity.
- vi. US has determined that China is the largest exporter of subject goods. The US and EC authority also concluded significant growth in capacity of subject goods with the producers in China. Number of producers in China, as per US findings, has increased to 6 times in the third review of what was in the original investigation.
- vii. USA is the second largest exporter of subject goods. The US Findings shows the trade balance which evidences the same. Global exports from USA also show that exports have been increasing throughout the injury period.
- viii. American exports to the world are being made at prices higher than what it is exporting to Indian market. Exports from USA to world have consistently increased showing their export orientation.
- ix. Anti-dumping duty remains in force for a period of five years from its imposition, unless reviewed further. The WTO Agreement mandates that ADD shall remain in force as long and to the extent necessary. If the situation warrants continuation of ADD for more than 10 years the same needs to be done. There are a number of instances where authorities have continued the duty in the first and subsequent sunset reviews.
- x. Facts of the EC and USA cases are similar. Whereas imports from China into US and EC are negligible, the imports into India continue to be significant. The demand in USA was also declining whereas the demand in India is increasing consistently. There is all the more reason to continue levy of ADD against imports of subject goods. If, with similar parameters the authorities in EC and USA have continued antidumping duty, there appears no reason with the Authority to not continue the ADD in the present situation.

Submissions by the other interested parties

55. The following submission have been made by the other interested parties in this regard -

- i. No case of likelihood of dumping and consequential injury to the domestic industry is shown against the subject countries by the petitioner.
- ii. The petitioner is unable to prove likelihood and injury against USA, as a major chunk of imports is made by one of the petitioners. M/s V R Persulphates bought the imported goods knowing that they are getting the imported goods and after taking part in import, they cannot now claim likelihood of dumping and injury in the event of expiry of present duties.

Examination by the Authority

- 56. The Authority has examined the contention of the Domestic Industry to examine likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury, in terms of Annexure II (vii) of the Rules.
- 57. All information submitted to the Authority has been examined to determine as to whether there is a likelihood of continuation or recurrence of dumping or injury in the event of cessation of the duty. Since in the present case, the domestic industry has witnessed a growth in its economic parameters, it is more relevant to determine whether injury to the domestic industry is likely to recur on account of dumping, if the duties cease to be in force. The Authority has considered various information, as made available by the domestic industry and other interested parties, in order to evaluate the likelihood of continuation or recurrence of dumping or injury.

i. Long history of dumping and Continued imports

- 58. It has been submitted by the petitioner that the subject goods have a history of continued dumping in the country. Despite imposition of Anti-dumping duty the product concerned is still being imported in significant volumes. The dumping margin determined for the subject countries for previous investigation was positive and significant but for the present review the dumping margins are not significant.

ii. Excessive production capacity held by the Subject Countries

59. **China:** It has been submitted by the petitioner that the Producers in China PR maintain huge capacities to produce persulphates. As evidence of surplus capacity, the domestic industry has relied upon the US final findings of 'Persulphates from China' which was a third review and also on the findings of expiry review of EC extending definitive duties on imports of peroxosulphates (persulphates) from China in March, 2014 and December, 2013 respectively. The petitioners have also ascertained capacities of the producers in China and the total known capacities is to the tune of 3,54,000 MT. The entire demand in India is only 7,850 MT. They have further submitted that freely disposable production capacities with the producers in China are sufficient to cater to the entire domestic demand in the event of cessation of anti-dumping duty.

Producer	Capacity (MT)
Youxi County, Fujian Province Tianda Reagents Limited	11,000
Yatai Electrochemical Co. Ltd.	58,000
Shaanxi Baohua Technology Co. Ltd.	16,000
Youdede Hefei Ltd.	23,000
Zhangzhou Ping Yongsheng Chemical Co. Ltd.	7,000
Fujian Zhanhua Chemical Co., Ltd	83,000
United Initiators	23,000
Production capacities as per last findings	
Shanghai Ansin Chemical Co., Ltd	5,000
Degussa-aj (Shanghai) Initiators Co.,Ltd	15,000
Fujian JianouYongsheng industry Co., Ltd	35,000
HebeiJiheng Group Co.,Ltd	27,000
HengshuiJiamu Chemical Co., Ltd	18,000
Fulida Industry Co. Ltd.	15,000
ZHANHUA Chemicals Industrial Co. , Ltd	27,000
ABC Chemicals (Shanghai) Co. Ltd	6,000
Total	3,53,000

60. **USA:** It has been submitted by the petitioner that they have not been able to get publically available evidence on excess capacity in other subject countries. However, as per market information of the domestic industry, producers in USA have large capacities causing them to dump goods in India at intensified rate despite imposition of anti dumping duties. They further stated that FMC is the sole producer of the subject goods which is one of the largest producer and exporter of the subject goods. The US review finding demonstrates that there has been decline in the domestic demand and increase in the capacities of the producer which indicates that there is a significant unutilised capacities in USA.

iii. Export Orientation of subject countries

61. The petitioner has relied upon the US findings wherein it was stated that China is the largest exporter of the subject goods in the world. The US authority has also concluded significant growth in the capacity of subject goods with the producers in China.
62. It shows that the capacity with Chinese exporters kept on increasing. Also, the number of producers in China, as per the US findings, has increased to 6 times in the third review of what was present in the original investigation indicating the increase in capacities, surplus or otherwise.
63. With respect to USA, the petitioner has given the trade data showing that exports from USA to world have consistently increased confirming their export orientation. Also the exports from USA to India

have also consistently increased, further the rate has consistently remained below the prices at which the USA is exporting to the world indicating selective dumping in Indian market.

S.N.	Particular	Exports from USA				
		2,013	2,014	2,015	2,016	POI
	Quantity in MT					
1	India	603	741	844	1,315	1,413
2	other Countries	17,225	15,518	16,436	17,190	17,588
3	Total	17,828	16,258	17,280	18,505	19,001
	Rate\$/kg					
1	India	1.33	1.44	1.45	1.47	1.40
2	other Countries	2.08	2.28	2.12	1.84	1.79
3	Total	2.05	2.24	2.09	1.82	1.76

64. Petitioners have claimed that USA has huge production capacities as compared to total demand in India, which indicates that this export quantity from USA may intensify if the current duties cease to exist.

iv. Third country exports and antidumping measures by other jurisdictions

65. It has been stated by the petitioner that China is attracting anti-dumping duties in other countries as well. USA has concluded its third review against imports of Persulphates and imposed duty. The review recently conducted by USA has reconfirmed dumping by China and has imposed duty at the rate of 119.02 percent. EU, imposed antidumping duty on Persulphates from China in October 2007. The same were then continued in December, 2013, for a period of five years, and are currently in force. The current antidumping duty rate applicable to China is 71.8 percent. The cessation of duties will intensify the dumped imports from the subject countries.

G. OTHER KNOWN FACTORS & CAUSAL LINK

66. After examination of existence of material injury, volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry as above, in terms of its price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Rules and Agreement on Anti-dumping, the Authority proceeded to see whether any factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry.

i.) Imports from Third Country

67. The 87% of imports of the subject goods are from subject countries. The imports from other countries are not significant in volume terms so as to cause or threaten to cause injury to the domestic industry.

ii.) Contraction in demand

68. The demand for the subject goods has shown an increasing trend in absolute terms throughout the period.

iii.) Trade restrictive practices

69. The Authority notes that there is no trade restrictive practice which could have impacted the Domestic Industry.

iv.) Developments in technology

70. The technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, developments in technology had no impact on the growth of the DI.

v.) Changes in pattern of consumption

71. The DI is producing similar goods that have been imported into India. Possible changes in pattern of consumption are not a factor that could have caused any impact on the DI.

vi.) Productivity of the domestic industry

72. The Authority notes that the production and productivity of DI has shown improvement when compared from base year to the subsequent years in the injury period and POI.

H. POST DISCLOSURE COMMENTS

73. The post disclosure submissions have been summarized and addressed as below:

a) Views of the Domestic industry

74. The Domestic Industry made the following submissions:

- i. Petitioners submit that the disclosure statement does not constitute sufficient disclosure of essential facts. With regard to likelihood of recurrence of injury, the disclosure statement merely contains parameters or information or verified data that are relevant to establishment of facts. The essential facts under consideration have not been disclosed.
- ii. The petitioners submit that the information given by the exporters for determination of normal value, export price or dumping margin constitutes “data/information”, while the normal value, export price & dumping margin constitutes “facts”. The Authority has not disclosed these details.
- iii. Petitioners have requested to issue a meaningful disclosure for the domestic industry to provide meaningful comments. Further, the petitioners reiterate their request for a hearing and additional time for offering comments in view of several factual unresolved issues of the case and the need to appropriately bring these before the Designated Authority.
- iv. In the absence of any responding producers/exporters of the subject goods from the USA the Authority is unable to determine normal value in case of USA. Thus, the Authority has determined separate normal value for each of the three types of the PUC as per facts available and in terms of Rule 6(8) considering the optimum consumption norms of the domestic industry for raw materials and utilities, conversion cost, interest, SGA, etc. at the levels allowed for the domestic industry including reasonable profit on the cost of production. Petitioners however submit that the normal value is required to be determined on the basis of actual cost of production in India, duly adjusted. The rules does not provide for considering normated costs. The rules provide for consideration of actual cost of production.
- v. The import prices are undercutting the prices of the domestic industry. The consumers would therefore switch to imported product in the event of cessation of anti dumping duty which will lead to significant increase in imports of the product.

b) Views of the opposing interested parties

75. Opposing interested parties made the following submissions:

- i. The importer has contended that M/s V R Persulphates (one of the petitioners) have not disclosed the fact that they have imported the material from subject country at the time of petition and in our understanding parties cannot make any incorrect statement or conceal facts from the Authority while filing a petition. If a petitioner buy/arranges imported material from importers and process it a gives it to the end customers, such activity also should be treated as imports. If such a practice is permissible, it will lead to circumventing provisions of Rule 2 (b) viz. imports by the petitioner.
- ii. It is provided in the Disclosure statement viz. imports by the petitioner that the quantities purchased are insignificant in relation to its own production, Indian production and total imports. However, no information in terms of actual volume or percentage is provided so that we could have offered any comments here. Continued imports are demand supply specific and not oriented to the ADD in force.

- iii. The Disclosure also shows that the price underselling on account of imports of the subject goods from the China PR is negative for POI as well as post POI whereas from USA it is nominal for POI and negative for post POI. This position clearly substantiates the fact that the DI is not vulnerable to likely dumping and any injury in the event of expiry of present duties. The duty should be discontinued in view of such robust development in performance of the DI which is also not vulnerable to any likely injury.
- iv. The excess capacities with producers in exporting countries are not conclusively indicative of the fact of likelihood of injurious dumping in the event of expiry of present ADD.
- v. The overall economic situation of the DI is very healthy. All the volume and value parameters show sharp growth throughout the injury period. The position of DI on economic parameters show the duty has met its purpose that the distorting effect of dumping found earlier is all removed and the DI is in a position to compete fairly in the market. The duty should be discontinued in view of such robust development in performance of the DI which is also not vulnerable to any likely injury.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

76. It is noted that the issues raised at post disclosure stage have already been examined by the Authority and addressed appropriately in above relevant paragraphs.

I. CONCLUSIONS

77. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts available, as recorded in this finding, the Authority concludes that:
- i. The performance of Domestic Industry has shown significant improvement on the injury parameters. Therefore, it is concluded that the alleged dumped imports are not affecting the performance of the Domestic Industry.
 - ii. The dumping margin in case of China PR is de-minimis. It implies that their own market is capable to consume their own production. Therefore, there is no evidence of likelihood of dumping from China PR though they have substantial production capacity of PUC.
 - iii. As submitted by domestic industry, American exports to the world are being made at prices higher than what it is exporting to Indian market. It means, Indian market is not their target country, since export realisation from India is lesser than any other countries they export. Therefore, there is no substantial argument that dumping would recur in case of cessation of duty from USA.

J. RECOMMENDATION

78. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all the interested parties and adequate opportunity was given to the domestic producers, exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the present investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules it is established that the domestic industry is not suffering injury on account of the subject imports from the subject countries and there is no causal link between the dumped imports and material injury to the domestic industry due to reasons given above. The Authority is of the view that imposition of antidumping duty is not warranted in the present investigation. In view thereof the Designated Authority considers it appropriate not to recommend Anti-Dumping Duty in respect of Peroxosulphates (Persulphate) originating in or exported from China PR and U.S.A.
79. An appeal against this notification shall lie before the Customs, Excise, and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 and the decision by Hon'ble High Court of Delhi in M/s Jindal Poly Film Ltd. v. Designated Authority WP.P. (Civil) No. 8202/2017.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. and Director General